मानव-जीवन और परलोक

मानव जीवन

और

परलोक

मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स
दावत नगर, ओखला, नई दिल्ली-110025

दो शब्द

मौत एक ऐसी सच्चाई है, जिसको इन्सान झुठला नहीं सकता। इन्सान अपने क़रीब अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को मौत के गाल में समाते हुए देखता है, लेकिन उन्हें मौत से बचा नहीं सकता। उसे यह ख़्याल भी आता है कि एक दिन उसे भी मरना है और सदैव के लिए इस संसार से चले जाना है।

इन्सान के सामने कुछ प्रश्न ऐसे हैं, जिनका सही उत्तर मिलना अत्यंत आवश्यक है। जैसे—जीवन क्या है, ज़िन्दगी का स्रष्टा कौन है, हमसे वह क्या चाहता है, मौत क्या है, मौत के पश्चात् जीवन है या नहीं, अगर जीवन है, तो परलोक में सफल व कामयाब होने के लिए इस सांसारिक जीवन में क्या करना होगा। अगर जीवन नहीं है, तो क्या मौत के पश्चात् जीवन समाप्त हो जाता है?

इन प्रश्नों पर दार्शनिकों और विद्वानों ने हमेशा ही चिन्तन-मनन किया है, विशेष रूप से इस जीवन के बाद आने वाली मौत के बारे में तथा कुछ धर्मों ने भी इसके बारे में प्रकाश डाला है, जो इस तरह हैं—

1. यह जीवन अस्ल और आख़िरी है। मरने के बाद कोई जीवन नहीं है, इसलिए इन्सान इस जीवन को हर तरह से सफल बनाए। जीवन का उद्देश्य बस ऐशो-आराम व भोगविलास है।

2. कुछ लोगों का विचार है कि मौत के बाद जीवन है। इसे परलोक का जीवन कह सकते हैं। स्वर्ग और नरक भी एक सच्चाई है। पारलौकिक जीवन में स्वर्ग पाने के लिए इन्सान उस ईश्वर के बेटे पर अपनी आस्था रखे और यह स्वीकार करे कि हर इन्सान पैदाइशी गुनहगार है अर्थात् जन्मजात पापी है। उसके बेटे ने सूली पर जान देकर इन्सानों के गुनाहों और पापों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा कर दिया।

3. कुछ दूसरे लोगों का विचार है कि मरने के बाद जीवन का अंत नहीं

होता। इन्सान अपने भले और बुरे कर्मों का फल भोगने के लिए बार-बार इस संसार में जन्म लेता है, कभी कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और कभी इन्सान के रूप में। यहां तक कि 84 लाख योनियों में भ्रमण करने के पश्चात् इन्सान को मुक्ति मिलती है।

4. एक धारणा यह भी है कि यह सांसारिक जीवन हर इन्सान के लिए एक इम्तिहान है। इन्सान और समस्त जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, चल-अचल सब चीज़ों का स्रष्टा एक है। ईश्वर ने इन्सान को बुद्धि-विवेक प्रदान की है, ताकि वह सोच-विचार करके अपना जीवन-व्यतीत करे कि मौत के बाद एक हमेशा का जीवन है। जिसने ईश्वर को एक मालिक, पालनहार, स्रष्टा मानकर उसके बताए हुए मार्ग पर चलकर अपना जीवन निर्वाह किया, वह मरने के बाद स्वर्ग का अधिकारी होगा। यह उसके लिए बहुत ही बड़ी सफलता है। जिसने ईश्वर को नहीं माना और उसके बताए गए मार्ग पर न चला और अपना जीवन ईश्वरीय इच्छा के विपरीत गुज़ारा, वह नरक का भागी होगा। उसे नरक की दहकती हुई आग में सदैव के लिए जलना होगा। यह उसके लिए बहुत बड़ी नाकामी व असफलता होगी। इन्सान अपने सांसारिक कर्मों के लिए ईश्वर के समक्ष जवाबदेह है और हर कर्म के बारे में अल्लाह इन्सान से पूछेगा।

ये विचार व धारणाएं एक ही समस्या के बारे में एक-दूसरे से विपरीत ही नहीं, बल्कि एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। एक ही समय में सब सही कैसे हो सकते हैं, उनमें से कौन-सा विचार सही और सच्चाई के क़रीब है? इसकी जानकारी प्राप्त करके इसकी कमियों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी इन्सान की है।

मौत के बाद जीवन के बारे में इस किताब में कुछ लेख जमा किए गए हैं, ताकि उन लेखों के द्वारा सही परिणाम तक पहुंचा जा सके। इस संसार में मानव को एक ही बार जीवन मिला है। पारलौकिक जीवन या मृत्यु पश्चात् जीवन के बारे में हमें बहुत सोच-समझकर निर्णय करना है। आज के ग़लत फ़ैसले का परिणाम कल के नरक की आग और भयानक प्रकोप के रूप में सामने आए, तो यह कितना भयानक परिणाम है।

जो लोग मौत के बाद जीवन को आंखों से देखे बिना मानने के लिए तैयार नहीं हैं, वे विश्वास के साथ केवल इतनी बात कह सकते हैं कि हम नहीं जानते कि मरने के बाद कोई जीवन है या नहीं, लेकिन वे यह बात नहीं कह

सकते कि हम जानते हैं कि मरने के बाद कोई जीवन नहीं है। किसी सच्चाई को मालूम करने के लिए आंखों से देखना ही एक मात्र रास्ता नहीं है। आज तक कोई मरने वाला वापस लौट कर यह नहीं बताया कि मौत के बाद जीवन है, स्वर्ग और नरक सब कुछ है और न ही उसने यह बताया कि मौत के बाद कोई और जीवन नहीं है। स्वर्ग और नरक की धारणा सब झूठ है, मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा है कि वहां कुछ नहीं है। जब जीवन के इतने अहम मसले में ऐसी सूरतेहाल से हम दो-चार हों, तो फिर सच्चाई तक पहुंचने का मार्ग क्या हो सकता है?

मौत के बाद जीवन के बारे में आंखों देखी असफलता के बाद सच्चाई तक पहुंचने का दूसरा मार्ग वह है कि अपनी पैदाइश, क़ायनात (ब्रह्माण्ड) की निशानियां और सबूतों पर सोच-विचार करके इसके सत्य व असत्य होने के बारे में अपना मत प्रकट करें।

धार्मिक व पौराणिक किताबों, वेद और बाइबल से मालूम होता है कि मौत के बाद जीवन है। स्वर्ग और नरक एक हक़ीक़त है। महाप्रलय के बाद मरे हुए इन्सान जीवित होकर स्वर्ग और नरक को अपनी आंखों से देखेंगे, यह बात बिल्कुल यथार्थ है। क़ुरआन आज से 1450 वर्ष पूर्व ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर अवतरित हुआ था। यह अन्तिम ईशग्रंथ है। इसमें समस्त मानव के लिए हिदायत, आदेश-निर्देश तथा मार्गदर्शन है। इसके बाद कोई और किताब मानव के मार्गदर्शन हेतु नहीं आएगी। हमारी आंखों से अदृश्य सच्चाई को जानने के लिए और स्वीकार करने के लिए पवित्र क़ुरआन, इस ब्रह्माण्ड में फैली हुई क़ुदरत की निशानियों और प्रमाणों पर चिन्तन-मनन करने की दावत (आवाहन) देता है और उनकी आवश्यकताओं और मांगों के बारे में भी बताता है।

इन सच्चाइयों को इन्कार करने से जो नुक़सान होगा, क़ुरआन उससे भी मानव को अवगत करता है। इसीलिए बुद्धि-विवेक और चिन्तन-मनन करने की योग्यता ईश्वर ने केवल मनुष्य को दिया है। इन्सान के लिए यह बहुत बड़ी परीक्षा की घड़ी है कि वह अपने बुद्धि-विवेक व योग्यता के द्वारा केवल अपनी अमानुषिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, जैसे खाना-पीना, रहना-सहना इत्यादि या अपनी ज़िन्दगी के बुनियादी सवालात और अन्जाम के बारे में चिन्तन-मनन करके सही नतीजे तक पहुंचता है।

इन लेखों का अध्ययन करने वाले पाठकगण से मेरी अपील है कि वह अपने दिल-दिमाग़ को पुराने विचारों, किसी क़िस्म के ईर्ष्या भाव से परे होकर उदासीन व निष्पक्ष रूप से चिन्तन-मनन करें। यह अवश्य सोचें कि मौत के बाद हमेशा का जीवन, स्वर्ग-नरक सब सत्य हो और मैंने सांसारिक जीवन, पारलौकिक जीवन का इन्कार करके व्यतीत किया, तो मेरा परिणाम क्या होगा?

इन लेखों का अध्ययन करने के बाद कोई पाठक इससे सहमत हो, तो जीवन पश्चात् मृत्यु और कर्मों का ईश्वर के समक्ष जवाबदेही (उत्तरदायित्व) की धारणा को स्वीकार करने में किसी चीज़ को रुकावट नहीं बनने देना चाहिए। क्योंकि किसी यथार्थ को अस्वीकार करने से सच्चाई नहीं बदलती और इन्कार का परिणाम किसी भयावह नुक़सान के रूप में सामने आएगा।

एक ईश्वर निराकार सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी अल्लाह को मानने और उसके सामने पारलौकिक जीवन में कर्मों की जवाबदेही का दृढ़ विश्वास के अमली तक़ाज़े हैं। जिनको जानना और व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में पूरा करना ज़रूरी है। यदि यह न हो, तो मानना या न मानना बेकार व व्यर्थ होगा। विशेषकर ईश्वर ने अपना संदेश और सम्पूर्ण जीवन के लिए मार्गदर्शन जिन ईशदूतों और महापुरुषों को और अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और उन पर अवतरित ईशग्रंथ क़ुरआन को मानना ज़रूरी है।

हमें आशा है कि पाठकगण को इस किताब के अध्ययन से जीवन के इस मूल और अहम मसले की सच्चाई को समझने और स्वीकार करने तथा उसके बारे में निर्णय करने में सहायता मिलेगी।

मुहम्मद इक़बाल मुल्ला

सचिव, जमाअत इस्लामी हिन्द,
नई दिल्ली-110025
मोबाइल : 09810032508

इस जीवन के बाद क्या?

❖ **मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मन्सूरी**

हमारा देश, एक धर्म प्रधान देश है। यहां प्राचीन काल से ही धर्म अपने विभिन्न रूपों (Denominations) में मौजूद रहा है। दूसरे शब्दों में, धार्मिकता इस समाज की उभरी हुई विशेषता रही है। इसने देश के जन-मानस को काफ़ी प्रभावित किया है। इस प्रकार यह स्वयंसिद्ध वास्तविकता है कि धार्मिक मूल्यों की मानव-जीवन को सदैव आवश्यकता रही है, लेकिन इस तथ्य को भी नहीं भूलना चाहिए कि समाज में धार्मिक मानसिकता और धार्मिक विचारधाराओं की मात्र मौजूदगी ही काफ़ी नहीं है, बल्कि उनकी मौलिकता का प्रश्न प्रमुख होता है। धार्मिक मूल्य जितने मौलिक होंगे, उतने ही प्रभावकारी भी होंगे और इंसान की नैतिकता और उसके शील-स्वभाव व चरित्र को उत्तम बनाएंगे।

भारतीय समाज विभिन्न गंभीर समस्याओं से दो-चार रहा है। आज इन समस्याओं में और वृद्धि होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण मौलिक धार्मिक मूल्यों का ह्रास और भौतिकवादी संस्कृति का खुला आक्रमण है। कुछ अति स्वार्थी लोगों ने अपने घृणित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आम जन में विभिन्न प्रकार की कृत्रिम समस्याएं पैदा कर दी हैं, जो भयावह रूप धारण कर रही हैं। इन्होंने लोगों के मन-मस्तिष्क को इतना प्रभावित कर डाला है कि उनके जीवन में स्वेच्छाचार, कुमार्गगमन, और स्वच्छंदता का फैलाव हो रहा है, जिसके नतीजे में लोगों में ईश्वर के प्रति जैसी निष्ठा और भक्ति व बन्दगी होनी चाहिए, उसका अभाव हो गया है। यह बाहरी दिखावों तक सीमित हो गई है और मनुष्य विभिन्न प्रकार की संकीर्णताओं का शिकार होता जा रहा है। वह भौतिकता की चलती-फिरती मशीन बन चुका है। उसकी सारी गतिविधियां दुनिया की प्राप्ति और भौतिकवाद तक सीमित हो गयी हैं। वह सही या ग़लत ढंग से हर हाल में दुनिया कमा लेना चाहता है। उसमें पारलौकिक जीवन की कल्पना नहीं पाई जाती और न ही वह दायित्व-बोध

उसमें पाया जाता है, जो इन्सान का अपने पैदा करने वाले के प्रति होना चाहिए। पारलौकिक जीवन की जो कल्पना कहीं दिखती भी है वह अवास्तविक कृत्रिम एवं काल्पनिक होने के कारण प्रभावोत्पादक नहीं बन पाती।

पारलौकिक जीवन को नकारने के दुष्परिणाम

इस जीवन के पश्चात् के जीवन की धारणा को नज़रअंदाज़ करने से अनेक प्रकार के चारित्रिक विकार इन्सान में जन्म लेते हैं। उसका व्यक्तित्व संकुचित और विकृत हो जाता है। वह मूल्य, मर्यादा और नैतिकता की परवाह नहीं करता। अतः वह सामान्यतः नेकी और भलाई के कामों के लिए आमादा नहीं होता। उसका हर काम व्यक्तिगत लाभ-हानि पर केन्द्रित हो जाता है। उसे बुराई, बदकारी और भ्रष्ट तौर-तरीक़े अपनाने में कोई संकोच नहीं होता। इस प्रकार समाज विभिन्न प्रकार की बुराइयों, समस्याओं और विकारों से पट जाता है। वर्तमान समाज की यह दुर्दशा हमारे सामने है।

आज इन्सानों की एक बड़ी संख्या अपने कर्मों के प्रति लापरवाह और दायित्वहीन हो गयी है। वह इस वास्तविकता से अपरिचित है कि इस जीवन के पश्चात् आने वाले जीवन में उसको अपने सारे कर्मों का हिसाब जगत् के स्वामी सर्वशक्तिमान ईश्वर को देना पड़ेगा। यदि उसके कर्म अच्छे हुए, तो उसे पुरस्कार मिलेगा और वह स्वर्ग (जन्नत) का पात्र होगा और यदि वह इस दुनिया से बुराइयां समेटकर ले गया, तो दंडित होगा और नरक (जहन्नम) का भागी बनेगा। पारलौकिक जीवन की मौलिक धारणा न केवल इन्सान का मार्गदर्शन करती है, उसमें अच्छे आचरण और चरित्र पैदा करती है, बल्कि यह सृष्टि-रचना के उद्देश्य, वास्तविक न्याय और ईश्वर की तत्वदर्शिता का तक़ाज़ा भी यही है कि हर कर्म का यथोचित परिणाम अवश्य मिले।

जब इन्सान अपने पैदा करने वाले के प्रति ही कृतज्ञ नहीं होगा, उसके प्रति अपने कर्मों के सिलसिले में जवाबदेही से बेख़बर एवं असावधान होगा, तो स्पष्ट है कि वह नेकी, भलाई और कल्याण के कामों से दूर हो जाएगा और वह जो भी कर्म करेगा उससे दूसरों के लिए कष्टकर और अलाभकारी होगा! साथ ही स्वयं के लिए भी दुखदाई, हानिकारक और अमंगलकारी होगा।

मानव-जीवन के विकार

परलोक के जीवन की सही, मौलिक, वास्तविक और सुदृढ़ धारणा के अभाव के कारण इन्सान का जीवन अनेकानेक समस्याओं और विकारों से ग्रस्त हो जाता है। जब इन्सान के दिल में यह भावना नहीं रहती कि उसे अपने कर्मों के बारे में सर्वशक्तिमान प्रभु के समक्ष जवाबदेह होना है, उसमें अपने कर्मों और आचार-विचार के सिलसिले में ईशभय नहीं पाया जाता, तो वह स्वच्छंद और आज़ाद होकर जो जी में आता है, करता है। वह वैध-अवैध, उचित-अनुचित और मर्यादित-अमर्यादित की वह परवाह नहीं करता, यहां तक कि उसे इन्सानी जान व माल के साथ खिलवाड़ करने में भी कोई संकोच नहीं होता।

ईशपरायणता और परलोकवाद व कर्म-फल की सही धारणा के अभाव के कारण वह अपने कुत्सित स्वार्थ में अंधा होकर बेगुनाह और निर्दोष लोगों एवं नवजात बच्चियों की हत्याएं तक कर डालता है उनके माल-असबाब को लूट लेता और बर्बाद कर डालता है। महिलाओं और बच्चियों को अपनी हवस का शिकार बनाता है और उन पर तरह-तरह के ज़ुल्म ढाकर अपनी निष्ठुरता का प्रदर्शन करता है । वह लोगों का हक़ मारता है। शराब, सूद (ब्याज), अश्लीलता, नग्नता और बेहयाई के कारोबार फैलाकर लोगों की शारीरिक और मानसिक क्षमताएं कुंठित करता है और उन्हें ग़लत दिशा देता है। अपने से कमज़ोर लोगों का शोषण करता और करवाता है। उनका मान-मर्दन करके अपने अहं को तुष्ट करता और ख़ुश होता है। उनके साथ न्यायपूर्ण व उचित व्यवहार नहीं करता।

इस प्रकार उन्हें दलित दमित बने रहने के लिए बाध्य करता है। उनके दर्द, दुख और चीख़-पुकार और बेबसी की हालत पर वह तरस नहीं खाता और न ही सहानुभूति जताता है। इस प्रकार हिंसा, उपद्रव, अत्याचार, अनाचार और अन्याय का क्रम चलता रहता है। इन सबको उचित साबित करने और विरोध-आपत्ति को किसी हद तक नकारात्मक बनाने के लिए यह अफ़सोसनाक बात भी कही जाती है कि यह सब नियति है और पूर्वकर्मों की यह सज़ा मिल रही है। फिर समाज कितना अकल्याणकारी और अमानवीय हो जाता है!

पारलौकिक जीवन को मानने के फ़ायदे

इसके विपरीत परलोक को मौलिक रूप में मानने से इन्सान का चरित्र निखरता और संवरता है, वह भले और नेक काम करता है, किसी का हक़ नहीं मारता और न किसी पर ज़ुल्म-ज़्यादती करता है। वह सबका हित, लाभ और कल्याण चाहता है और जो अपने लिए पसन्द करता है, वही दूसरों के लिए भी पसन्द करता है। वह वर्तमान जीवन की भौतिक सुख-सामग्री का लालसी नहीं बनता, और न ही दुनिया को अपना सब कुछ समझता है। उसकी दृष्टि व्यापक हो जाती है। अतः वह सामयिक और तत्कालिक फ़ायदों को ही सब कुछ न मानकर इस जीवन के बाद के जीवन की स्थाई सुख-शान्ति, ख़ुशी और सफलता का अभिलाषी होता है। इसके लिए वह भले और नेक काम करता है, बुराई, अत्याचार, अनाचार, अन्याय और अश्लीलता से दूर रहता है।

परलोक पर विश्वास रखने वाले इन्सान में साहस और उत्साह विकसित होता है। उसके नज़दीक निराशा और कायरता नहीं फटकती। उसका ईश्वर पर पूरा विश्वास होता है। वह परलोक की सफलता और उसकी स्थाई ख़ुशी प्राप्त करने के लिए दुनिया के संकटों और उसकी समस्याओं का सहजता एवं सुगमता के साथ मुक़ाबला करता है। वह इस जीवन की समस्याओं में इतना नहीं उलझता कि कर्तव्य-पथ से डिगने लगे, बल्कि वह हर परेशानी और हर परिस्थिति का उत्साहपूर्वक सामना करता है। वह हिम्मत नहीं हारता। दुनिया की असफलताएं उसे हताश नहीं करतीं, वह समस्याओं से घबराकर, हताश व निराश होकर, ज़िन्दगी से निराश होकर आत्महत्या नहीं करता, बल्कि वह सत्यनिष्ठ होकर अपने कर्तव्यों के पालन में लगा रहता है, क्योंकि उसे विश्वास होता है कि ये प्रतिकूल परिस्थितियां, इस सांसारिक जीवन की भांति इसी जीवन तक समयबद्ध, अस्थाई व सीमित हैं। सत्यनिष्ठ जीवन के आनन्दमय व स्थाई फल और शाश्वत परिणाम तो परलोक (स्वर्ग) में मिलेंगे ही।

उसे भली-भांति मालूम है कि पारलौकिक जीवन की सफलता इस पर निर्भर करती है कि दुनिया में बिगाड़ के बदले बनाव पैदा करे, अशान्ति और अत्याचार की जगह शान्ति और सलामती का वातावरण बनाए एवं दुनिया को बुराइयों एवं विकारों से मुक्त करने में मुख्य भूमिका निभाए। निर्धन, कमज़ोर

और असहायजनों के काम आए, उनकी सहायता करे, चाहे वे किसी भी धर्म, मत और जाति से संबंध रखते हों। परलोक पर सच्चा ईमान रखने वाला इन्सान प्रत्येक अत्याचार, विकार और अनाचार को समाप्त करने हेतु प्रयासरत रहता है। साथ ही नेकी और भलाई के कामों में अग्रसर रहता है। इसके लिए वह आवश्यकता पड़ने पर अपनी जान और माल की क़ुरबानी भी दे सकता है। इस प्रकार सद्गुणों और सद्विचारों पर आधारित जो समाज बनेगा, वह सहज रूप से बुराइयों और ज़ुल्म-ज़्यादती से मुक्त होगा। उसके लोगों में एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति, दया और सहयोग की भावना होगी, बल्कि वे दूसरों की आवश्यकतापूर्ति को अपने पर प्राथमिकता देंगे। उनमें घमंड, दंभ और अहंकार नहीं होगा। उसके लोगों में ईशभय होगा, जिसके कारण दूसरे सभी अनुचित भय और डर दिलों से निकल जाएंगे। इस प्रकार वे निर्भीक होकर ईश्वरीय मार्ग पर चलते जाएंगे। यह सब इसलिए होगा, क्योंकि वे समझते हैं कि परलोक का जीवन ईश्वर के हाथ में है। इस प्रकार इन्सान अंधकार से प्रकाश में आ जाता है और नेकियों व भलाइयों के कामों में लगे रहकर अपने लोक-परलोक को सफल बना लेता है।

इस्लाम में पारलौकिक जीवन की धारणा

इस्लाम में परलोक (आख़िरत) की धारणा उसके आधार-स्तंभों में से एक है। परलोक का इस लोक (दुनिया) से गहरा संबंध है। परलोक इस दुनिया का विकसित रूप है। हमें यहां जो कमी दिखाई देती है, वह वहां पूरी कर दी जाएगी। जो चीज़ें यहां छिपी हुई हैं, वहां वे छिपी न रहेंगी। इन्सान को दुनिया में अपने अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा पुरस्कार या दंड नहीं मिल सकता। इन्सान के भले-बुरे कर्मों के प्रभाव उसके जीवन के साथ समाप्त नहीं हो जाते, बल्कि सदियों तक उसके कर्मों का भला या बुरा प्रभाव पड़ता रहता है।

एक व्यक्ति ने मानवता को शिक्षित और संस्कारित किया, तो उसका प्रभाव दीर्घकाल तक होगा। इसी तरह एक व्यक्ति ने मानवता को ग़लत दिशा दी और अत्याचार किया, तो उसका कुप्रभाव भी दीर्घकाल तक बना रह सकता है। अतः अच्छे कर्मों के मूल्यांकन और बुरे कर्मों की बुराई को आंकने के लिए आवश्यक है कि कर्मों के सभी प्रभावों को देखा जाए और उनके प्रमाण जुटाए जाएं और अपराधियों को उन सारे लोगों के सामने दंड का

आदेश सुनाया जाए, जिनको उनके कर्मों के कारण किसी प्रकार का नुक़सान पहुंचा हो। ऐसा पूर्ण न्याय इसी संसार और इसी सीमित व नश्वर जीवन में मिलना संभव नहीं है, अतः ऐसे पूर्ण व निष्पक्ष न्याय के लिए भी परलोक की आवश्यकता है।

इस्लाम की धारणा है कि इन्सान का यह जीवन उसकी परीक्षा की घड़ी है। यह नश्वर जगत है, जिसका एक दिन विनाश होना निश्चित है। शाश्वत जीवन तो परलोक का जीवन (आख़िरत) है। यदि इन्सान एकेश्वरवाद (तौहीद), ईशदूतत्व (रिसालत), पारलौकिक जीवन (आख़िरत) आदि मौलिक धारणाओं को मानता है और जीवन में ईश्वरीय आदेशों का पालन करता है, नेकी और भलाई के कामों में लगा रहता है, तो उसके लिए परलोक में अच्छा बदला है, उसे जन्नत प्राप्त होगी, जहां उसे शाश्वत जीवन मिलेगा, जो सुख, शान्ति और समृद्धि से परिपूर्ण होगा। इसके विपरीत बुरे कर्म करने वाले नरक (जहन्नम) की यातना से दो-चार होंगे। वास्तविकता यह है कि इन्सान का जैसा कुछ प्रयास होगा, जैसा कुछ उसका चरित्र और कर्म होगा, वह अपना प्रतिफल लाकर रहेगा। परलोक में इन्सान अपने कर्म को छिपा न सकेगा। उसका किया-धरा सब सामने आएगा। उस दिन इन्सान के कान, आंखें, खालें, ज़ुबान और हाथ-पांव तक उसके कर्मों के गवाह होंगे। ईश्वरीय न्यायालय में अपराधी स्वयं अपने अपराध स्वीकार करेंगे और उन्हें अपने किए पर पछतावा होगा। वे चाहेंगे कि उन्हें दुनिया में फिर भेज दिया जाए और वे अच्छे कर्म करके आएं। लेकिन इसका अवसर ही नहीं रहेगा, क्योंकि परीक्षाकाल (सांसारिक जीवन) सदा के लिए समाप्त हो चुका होगा, और पारलौकिक जीवन की ईश्वरीय न्यायालय में कोई भी उनकी सहायता नहीं कर सकेगा। कोई रिश्ते-नाते काम न आएंगे। कोई दोस्त किसी के काम न आएगा। वे भी किसी की कुछ भी सहायता न कर सकेंगे, जिन्हें दुनिया में ईश्वर का साझी ठहराया गया था और उनसे तरह-तरह की उम्मीदें बांधी थीं। कोई किसी का बोझ न उठाएगा। हरेक को अपनी ही चिन्ता होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष उसके कर्मों का लेखा-जोखा पेश किया जाएगा। क़ुरआन स्पष्ट रूप से कहता है कि इन्सान के कर्मों की निगरानी अल्लाह के आदेश से हो रही है।

ईश्वरीय न्यायालय में हरेक के बारे में जो फ़ैसला होगा वह अत्यंत

न्यायानुकूल होगा। किसी पर ज़्यादती न होगी। उस दिन किसी का कोई हक़ मारा नहीं जाएगा। हरेक को वैसा ही बदला मिलेगा, जैसा उसने काम किए होंगे। उस दिन न्याय की तराज़ू बड़ी होगी। जिसकी नेकी के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होगा और स्वर्ग में जाएगा और जिसके पलड़े हल्के होंगे, वह नरक (जहन्नम) में जाएगा।

इन्सान अपना अहित और नुक़सान नहीं चाहता। उसके मूल स्वभाव में है कि वह ईश्वर का आज्ञाकारी बने, सन्मार्ग पर चले, लेकिन जब वह इस स्वभाव को अपनी मनेच्छाओं, कुत्सित स्वार्थों और बाह्य प्रभावों के अधीन कर लेता है, तो वह अपने अहित और नुक़सान की ओर सहज ही बढ़ता चला जाता है। उसका जीवन मौलिक गुणों, नैतिक व धार्मिक मूल्यों और मर्यादाओं से धीरे-धीरे ख़ाली हो जाता है और तरह-तरह की बुराइयां और विकृतियां इनकी जगह ले लेती हैं।

आज इन्सान के जीवन और समाज में जो बुराइयां और विकृतियां पायी जाती हैं, जिनका उल्लेख इस आलेख के शुरू में किया गया है, उनका बड़ा कारण ईशभय और पारलौकिक जीवन की सही धारणा के प्रति बेपरवाही, असावधानी और निश्चेष्टता है। आइए, हम अपने जीवन में धर्म की मौलिक धारणाओं को अपनाकर उसे सुधारें-संवारें। इस प्रकार लोक-परलोक में सफलता व सम्मान के साथ-साथ वर्तमान में भी हमारा, हमारे समाज और देश का नव-निर्माण भी होगा और मानवता का मान-सम्मान भी बढ़ेगा।

■■

कर्म, पुनर्जीवन और इस्लाम

❖ **डॉ॰ मुहम्मद अहमद**

मीडिया के विभिन्न माध्यमों में आए दिन इस आशय की चीज़ें आती रहती हैं कि अमुक लड़का-लड़की अर्थात् विभिन्न आयु-वर्ग के स्त्री-पुरुष अपने पूर्व जन्म की घटनाओं व वृत्तांतों से परिचित हैं। एक टी॰वी॰ चैनेल ने भावी परिणामों की अनदेखी करते हुए व्यावसायिकता में पगकर पूर्व जन्म और मृत्योपरान्त जन्म तक के बारे में जानकारी का दावा करके अपने व्यूअर्स की संख्या बढ़ाने में लगा रहा। यह दावा भी किया जाता है कि अमुक व्यक्ति अमुक व्यक्तित्व का 'पुनर्जन्म' है और इस आधार पर ऐसा भी हुआ है कि संपत्ति में हिस्सा मांगा गया। यह 'आयोजन' स्वप्रचार का माध्यम भी बनता रहा है, लेकिन यह अवधारणा जीवनोत्थान में गतिरोध और समस्याएं पैदा करती रही हैं। यह भी प्रचारित किया जाता है कि अमुक व्यक्ति की दुरावस्था उसके पूर्वजन्म का फल है, अतः उसे इसे भोगना चाहिए। वेदों में जन्म-जन्मान्तरवाद और आवागमनीय पुनर्जन्म का उल्लेख नहीं मिलता। इस अवधारणा का प्रवेश हिन्दू धर्म-दर्शन में परवर्ती युग में हुआ है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन इसके औचित्य पर सवालिया निशान लगाते हैं और लिखते हैं कि इसका अस्तित्व सामाजिक अत्याचार पर पर्दा डालने के लिए है।... ''इसी लोक में आकर फिर जनमना (पुनर्जन्म) तो पीड़ित वर्ग के लिए और भी ख़तरनाक चीज़ है। इसमें यही नहीं है कि आज के दुखों को भूल जाओ, बल्कि साथ ही यह भी बतलाया गया है कि यहां की सामाजिक विषमताएं न्याच्य हैं, क्योंकि तुम्हारी ही पिछले जन्म की 'तपस्याओं' (दुखों, अत्याचारपूर्ण वेदनाओं) के कारण संसार ऐसा बना है। इस विषमता के बिना तुम अपने आज के कष्टों का परितोषिक नहीं पा सकते'' ('दर्शन-दिग्दर्शन', किताब महल, संस्करण 1992, ई॰, पृ॰ 403)।

ख्यातलब्ध संत स्वामी पद्मन जी और स्वामी महेश्वरानन्द ने 84 लाख योनियों में कर्माधार पर परिभ्रमण को मिथ्या ठहराया है और लिखा है कि

इसका कोई तार्किक उत्तर नहीं है। सुख्यात चिन्तक डॉ॰ एम॰ एन॰ राय का विचार है कि ''पुनर्जन्म का सिद्धांत समाज में नियतिवाद को जन्म देता है और इन्सान को निष्क्रिय एवं पौरुषहीन बना देता है'' (Indian Message, पृ॰ 14, 151)। पं॰ मंगलदेव (तड़ितूकान्त) वेदालंकार ने 'यम और पितर' नामक अपनी पुस्तक में प्रचलित पुनर्जन्म की मान्यता का खंडन किया है। अन्य विद्वानों (डॉ॰ राधाकृष्णन, सत्यकाम विद्यालंकार आदि) ने जब भी इस अवधारणा को बुद्धि और विवेक की कसौटी पर परखा, तो इसे खरा नहीं पाया। पुनर्जन्म का दावा करने वाले अनेक मामलों की गहरी पड़ताल करने वाले अमेरिका के वरिष्ठ अध्येता डॉ॰ आईन स्टीवेंसन (वर्जीनिया विश्वविद्यालय) ने 'Children who remember privious lives' नामक जो मशहूर पुस्तक लिखी, उसमें वे किसी ऐसे निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकें कि अमुक केस तर्क, बुद्धि और विवेक की कसौटी पर खरा उतरा है और इससे आत्मा और आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यता पुष्ट हुई है।

जब इसे परखा गया

हमारे देश भारत में अब तक कई विद्वानों ने इस विषय पर बौद्धिक रूप से कुछ कथित पुनर्जन्मित कथा के सहारे अध्ययन किया है। राय बहादुर श्याम सुन्दरलाल, के॰के॰एन॰ सहाय, ताराचंद माथुर, डॉ॰ एम॰सी॰ बोस, लाला देशबन्धु गुप्त, प्रो॰ आज्ञेय, डॉ॰ केदार, डॉ॰ कीर्ति स्वरूप रावत, डॉ॰ एल॰पी॰ मेहरोत्रा, पं॰ नेकी राम शर्मा आदि विद्वानों ने इस विषय पर लेखनी चलाई है, लेकिन इनके विवेचनों से जो प्रश्न खड़े होते हैं, वे स्वयं इन्हें बुद्धि-विवेक की कसौटी से परे कर देते हैं।

आत्मा और आवागमनीय पुनर्जन्म की यह मान्यता इस्लाम, ईसाई, बौद्ध और दूसरे अन्य धर्मों व मतों में नहीं पायी जाती है। यह हिन्दू धर्म और कुछ मतों की मान्यता है, जिसके प्रति जनमानस को 'विवश' करने की कोशिश लंबे समय से की जाती रही है। यहां यह तथ्य भी नहीं भूलना चाहिए कि इसके लिए 'क़ायल व विवश' करने की जितनी भी कोशिशें की गईं, सबमें असफलता ही सामने आयी। इस मान्यता की वैज्ञानिक सत्यता को जांचने अर्थात् पुष्ट करने के लिए 1965 ई॰ के आसपास राजस्थान विश्वविद्यालय में परामनोविज्ञान विभाग खोला गया। वरिष्ठ परामनोवैज्ञानिक डॉ॰ एच॰एन॰ बनर्जी इसके अध्यक्ष बनाए गए थे।

डॉ॰ बनर्जी बड़े प्रतिभावान और सत्याधारित अनुसंधान के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने सौ से अधिक 'पुनर्जन्मित' कहे जाने वाले उन केसों को जांच-पड़तल के लिए अपने हाथ में लिया, जिसका उल्लेख परामनोविज्ञानी अपनी पुस्तकों में बार-बार कर रहे थे। अनुसंधान के लिए उन्होंने टीमें बना दीं। इन टीमों ने On the Spot (घटना स्थल पर) जाकर अनुसंधान कार्य पूर्ण किया। कई स्थानों पर डॉ॰ बनर्जी ख़ुद गए। उदाहरणार्थ, डॉ॰ बनर्जी एक बड़ी टीम के साथ तुर्की गए। इस टीम में वरिष्ठ डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक भी शामिल थे। बड़ी तैयारी के साथ यह टीम तुर्की रवाना हुई थी। वहां के अडाना ज़िले में 1956 में इस्माईल के कथित पुनर्जन्म की घटना को पुनर्जन्म के पक्ष में ख़ूब प्रचारित किया जा रहा था। कुछ लोग इसे सबसे मज़बूत केस मानते थे। जिस गांव का इस्माईल के निवासी होने की बात कही जा रही थी, डॉ॰ बनर्जी को न तो वह गांव ही मिल सका, न ही इस्माईल से भेंट हो सकी, जबकि घटना कुछ ही वर्ष पहले की बताई जा रही थी।

डॉ॰ बनर्जी ने काफ़ी प्रयास किया, पर असफलता ही हाथ लगी। उन्होंने इस घटना का उल्लेख विस्तार के साथ अपने शोध-कार्य में किया है। अब आइए, यह भी जान लें कि पुनर्जन्म के जिन सौ से अधिक केसों की उन्होंने जांच-पड़ताल कराई, उनका निष्कर्ष क्या रहा? पूरा आवागमनीय पुनर्जन्म खंड-खंड हो गया। एक भी केस सही नहीं पाया गया। डॉ॰ बनर्जी की कुछ पक्षों द्वारा कड़ी आलोचना की जाने लगी, उन्हें पद से हटा दिया गया और 1968 में रहस्यमय ढंग से उनके विभाग को बन्द कर दिया गया।

वैज्ञानिकता का अभाव

पुनर्जन्म के मामलों की पुष्टि अभी तक संभव नहीं हो सकी है। इसका वैज्ञानिक आधार अप्राप्य है। इसका एकमात्र कारण पुनर्जन्म का न होना है। 7 अक्तूबर 1968 को प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, ''मनोविज्ञान के विशेषज्ञों (Psychologists) ने कुछ केसों की जांच-पड़ताल करने के बाद यह मत प्रकट किया कि कुछ लोग जो अपने पूर्व जन्म की बातें बयान करते हैं, वे अधिकतर मानसिक हिस्टीरिया (Psychic Hysteria) रोग से ग्रसित होते हैं और बातें इसी का परिणाम होती है। जयपुर के मानसिक चिकित्सालय के डॉ॰ बी॰के॰ व्यास और एक अन्य विशेषज्ञ श्री रत्न सिंह का दावा है कि उन्होंने कुछ

केसों का इलाज किया है, जिसमें उन्हें सफलता मिली है। डॉ॰ व्यास ने यूनाइटेड न्यूज़ ऑफ़ इंडिया को साक्षात्कार देते हुए कहा कि जो लोग पूर्वजन्म की घटनाएं बयान करते हैं, उनकी मानसिक स्थिति साधारणतया संतुलित नहीं होती। ये अधिकतर व्यक्तिगत समस्याओं के केस होते हैं। ये लोग मानसिक असन्तुलन के कारण कुछ और बनने के इच्छुक रहते हैं। इस प्रकार मनगढ़ंत क़िस्से बयान करने से कुछ दूसरे लाभ प्राप्त हो जाते हैं।''

(हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली)

डॉ॰ व्यास ने अपने पक्ष-समर्थन के लिए कुछ केसों के विवरण भी दिए।

देश में पुनर्जन्म का दावा करने वाली जो भी घटनाएं सामने आई हैं, उनके पात्र या तो मानसिक रोग से ग्रसित रहे या किसी लाभ के निमित्त मनगढ़ंत क़िस्सा बनाया गया या काल्पनिक रूप से लिख दिया गया कि पुनर्जन्म की घटना अमुक स्थान पर घटी ऐसी एक घटना का उल्लेख करते हुए डॉ॰ एल॰पी॰ मेहरोत्रा लिखते हैं—यह घटना एक ऐसे बालक से संबंधित है, जिसकी बहन को पूर्वजन्म की स्मृतियां थी और जिससे उसको अपनी बहन से डाह हो गई और वह अपने को महात्मा गांधी का मृतात्मा बताने लगा। इस बालक ने गांधी की जीवनी के विषय में एक पुस्तक में पढ़ा था और उसी का सहारा लेकर उनके विषय में बताने लगा। जब लोगों को यह पता चला कि गांधी जी का पुनर्जन्म हो गया है, तो लोग बड़ी संख्या में उससे मिलने पहुंचने लगे। कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता भी वहां गए यहां तक कि सुशीला नैय्यर भी गईं। इस सबसे उस बालक को बड़ी शोहरत मिली, पर अन्त में उसकी पोल खुल गई और उसका झूठ सामने आ गया।

न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय

आत्मा के पुनर्जन्म और जन्म-जन्मान्तरवाद पर प्रतिष्ठित लेखिका सोमा सबलोक ने 1978 में 'आत्मा और पुनर्जन्म' पर एक आलेख लिखा, जिसमें उन्होंने आवागमनीय पुनर्जन्म की वैधता को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर परखकर रद्द कर दिया था।

याचिकाकर्ता ने दिल्ली की तीस हज़ारी अदालत में यह कहा था कि उक्त आलेख धर्म-विशेष की आस्था पर प्रहार करता है और जनभावनाओं को आहत करता है। न्यायालय ने इस मामले के विभिन्न पहलुओं का जायज़ा

लेकर 2 दिसम्बर 1983 को इसे ख़ारिज करते हुए अपने फ़ैसले में कहा कि ''विज्ञान के इस युग में आत्मा के अस्तित्व और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर शंका और आपत्ति करने का प्रत्येक का अधिकार है, क्योंकि ऐसा करना वैज्ञानिक और सुधारवादी विचारधारा पैदा करने की दिशा में आगे क़दम बढ़ाना है, जिसके लिए भारतीय संविधान की धारा 51 (अ) में निर्देश दिया गया है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर लेखिका ने इस लेख के द्वारा पाठकों को ज्ञानवान बनाने का प्रयास किया है। यह बात बड़े दुख के साथ कहनी पड़ रही है कि ऐसा प्रयास करने पर लेखिका पर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का दोष लगाया गया है और उसे कई वर्षों तक मुक़द्दमे का सामना करने का कष्ट झेलना पड़ा। यह लेख सच्चाई को खोजने की दिशा में एक यत्न है और यह नहीं कहा जा सकता कि इसे लिखकर हिन्दुओं की धार्मिक भावना को जान-बूझकर ठेस पहुंचाने का काम किया गया है। ईसाई, इस्लाम, बौद्ध और दूसरे अनेक धार्मिक मत हैं जो आत्मा और पुनर्जन्म (जन्म-जन्मान्तरवाद) के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते।

कुछ सहज प्रश्न

अतः जन्म-जन्मान्तरवाद और आवागमनीय पुनर्जन्म के पक्ष में कोई वैज्ञानिक, बौद्धिक और व्यावहारिक तथ्य नहीं प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत सहज रूप से कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं—

★ इन्सान के सुकर्मों-दुष्कर्मों पर पुरस्कार और दंड प्रकृति की मांग है, जिसकी पूर्ति किसी जीव-जन्तु में रूपान्तरित होने से असंभव है। फिर इस प्रचलित मान्यता में यह पता नहीं चलता कि वह किस सुकर्म-दुष्कर्म का फल भोग रहा है। इसलिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि इन्सान को पुनर्जीवन प्राप्त हो, जो आवागमन से मुक्त हो, बल्कि उसके कर्मों का उसकी जानकारी व बोध में उचित फल मिले। इस्लाम की पारलौकिक धारणा में इसका प्रावधान है।

★ सच्चे न्याय के लिए पारलौकिक जीवन अनिवार्य है।

★ आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यता के अनुसार पशु, पक्षी, वनस्पतियां आदि पाप कर्म का परिणाम हैं। तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि मानव जीवन के लिए लाभकारी इन चीज़ों को बढ़ाने के लिए पाप-कर्म ख़ूब किये जाएं।

★ इन्सान के कर्मों के प्रभाव उसकी मृत्यु के बाद भी पड़ते हैं। अतः बुद्धि-विवेक को अपेक्षित है कि उसके अच्छे-बुरे कर्मों के भावी पीढ़ियों पर पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन मूल्यांकन हो, फिर उसे दंडित किया जाए। इसके अभाव में समुचित दंड या पुरस्कार इस लोक में संभव नहीं है।

★ यह स्वाभाविक तथ्य है कि जब व्यक्ति यह समझता है कि वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों की सज़ा भुगतने के लिए पैदा किया गया है, तो सहज रूप से मनुष्यत्व प्रभावित होगा। उसमें आत्मसम्मान, स्वाभिमान और पुरुषार्थ की भावना नहीं पैदा होगी, बल्कि वह ग्लानि, क्षोभ, कुंठा और प्रायश्चित व हीन भावना से ग्रस्त जीवन गुज़ारेगा। उसकी उन्नति प्रभावित होगी।

★ लोगों का अहंकार बढ़ेगा। सम्पन्न लोग विपन्न और निर्धन जनों के साथ उपेक्षा पूर्ण व्यवहार और निम्न-भाव से पेश आएंगे और इस प्रकार मानवता ऊंच-नीच, छूत-छात में विखंडित होगी।

पुनर्जीवन की इस्लामी धारणा

इस्लाम सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था है। इसकी शिक्षाएं इन्सान के लिए सर्वथा कल्याणकारी और मोक्षदायिनी हैं। यह खुली हुई सच्चाई और वास्तविकता है कि इन्सान को इस लोक में अपने अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा पुरस्कार एवं दंड नहीं मिल सकता। इसके लिए परलोक का होना अनिवार्य है। विश्व के सभी बड़े धर्मों में परलोक की धारणा पाई जाती है। इस्लाम की शब्दावली में पारलौकिक जीवन को 'आख़िरत' कहते हैं।

इस्लाम की यह धारणा है कि मनुष्य का यह जीवन उसकी परीक्षा की घड़ी है। यह नश्वर जगत है, जिसका एक दिन विनाश होना निश्चित है। शाश्वत जीवन तो 'आख़िरत' (परलोक का जीवन) है। मनुष्य का यह जीवन शाश्वत जीवन के लिए तैयारी का अवसर जुटाता है। यदि मनुष्य अपने जीवन को ईश्वरीय आदेशों के अनुरूप बनाता है, एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व, पारलौकिक जीवन आदि मौलिक धारणाओं को स्वीकार करता है एवं सत्कर्मों में लगा रहकर जीवन व्यतीत करता है, तो उसके लिए अच्छा बदला है और वह जन्नत (स्वर्ग) का पात्र होगा। वहां उसे वास्तविक जीवन, सुख-शान्ति और अमरता प्राप्त होगी। वह इस लोक का अत्यंत विकसित रूप होगा, वहां कोई अल्पता और कमी न होगी। सत्कर्मी इसमें सदैव रहेगा। इसके विपरीत मिथ्याचार में

लगे दुष्कर्मी को जहन्नम (नरक) की दहकती आग में डाल दिया जाएगा, जिसमें वह सदैव जलेगा। दुष्कर्मी विभिन्न यातनाओं से भी दो-चार होगा।

इस्लाम पुनर्जन्म नहीं पुनरुज्जीवन (हश्र—Resurrection) को मान्यता देता है। वह मनुष्य के बार-बार जन्म लेने को नहीं मानता, वह मानव-आत्मा के जीव-जन्तु, वनस्पति आदि में परिभ्रमण के विचार को पूर्णतः निरस्त करता है, उसके अनुसार सारे मनुष्य जो मानव जीवन के आरंभ से लेकर क़ियामत (महाप्रलय) के आने के पूर्व तक के होंगे, सभी दोबारा पैदा किए जाएंगे और अल्लाह उनसे उनके कर्मों का हिसाब लेगा एवं कर्मानुसार पुरस्कार या दंड देगा।

क़ियामत (महाप्रलय) का आना यक़ीनी है (क़ुरआन 15:85)।

इस दिन अल्लाह सबको इकट्ठा करेगा (क़ुरआन, 15:25)।

''...और (उस समय परलोक में) कर्म-पत्र सामने रख दिया जाएगा। उस समय तुम देख लोगे कि अपराधी लोग अपनी ज़िन्दगी की किताब में अंकित बातों से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे कि, ''हाय हमारा दुर्भाग्य! यह कैसी किताब है कि हमारी कोई छोटी-बड़ी हरकत ऐसी नहीं रही जो इसमें अंकित न हो गयी हो।'' जो-जो उन्होंने किया था वह सब अपने सामने मौजूद पाएंगे, और तुम्हारा रब किसी पर तनिक ज़ुल्म न करेगा। (क़ुरआन, 18:49)

''चिन्ता उस दिन की होनी चाहिए जबकि हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को बिल्कुल नंगी पाओगे, और हम सारे इन्सानों को इस तरह घेरकर इकट्ठा करेंगे कि (अगलों-पिछलों में से) एक भी न छूटेगा। और सबके सब तुम्हारे रब के सामने पंक्तियों में पेश किए जाएंगे—लो देख लो! आ गए ना तुम हमारे पास उसी प्रकार जैसा हमने तुमको पहली बार पैदा किया था।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने क़ियामत के ये लक्षण बताए हैं : ज्ञान उठा लिया जाएगा, अज्ञान अधिक होगा, व्यभिचार की अधिकता होगी, शराब बहुत पी जाने लगेगी। पुरुष कम स्त्रियां अधिक हो जाएंगी यहां तक कि पचास स्त्रियों का सिरधरा एक (पुरुष) होगा (बुख़ारी, मुस्लिम, अहमद, तिरमिज़ी)।

जब सूर (नरसिंघा) में फूंक मारी जाएगी, तो सब अपनी क़ब्रों से

निकलकर अपने पालनहार की ओर चल पड़ेंगे (क़ुरआन, 36: 51)।

क़ियामत के दिन आकाश फट जाएगा, तारे झड़ जाएंगे, सूर्य लपेट दिया जाएगा, पर्वत धुने हुए ऊन की तरह हो जाएंगे, धरती कूट-कूटकर चूर्ण-विचूर्ण कर समतल कर दी जाएगी और जो कुछ उसमें भीतर है उसे बाहर डालकर ख़ाली हो जाएगी। मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे और दिलों के भेद प्रकट हो जाएंगे। जिस दिन लोग बिखरे हुए पतंगों के सदृश्य हो जाएंगे। (क़ुरआन, 82:1, 84:1, 82:2, 81:1, 89:21, 84:4, 100:9,10, 101:4)।

पुनरुज्जीवन के दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का पूरा-पूरा फल पाएगा। क़ुरआन में है–

''फिर जब 'सूर' में फूंक मारी जाएगी तो उस दिन उनके बीच रिश्ते-नाते शेष न रहेंगे और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे। फिर जिनके अच्छे कर्म भारी हुए, तो वही हैं जो सफल होंगे। रहे वे लोग जिनके अच्छे कर्म हल्के हुए, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। वे सदैव जहन्नम (नरक) में होंगे। आग उनके चेहरों को झुलसा देगी और उसमें उनके मुंह विकृत हो रहे होंगे।'' (23:101-104)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

''मरने वाले के साथ तीन चीज़ें चलती हैं : उसके घर वाले, उसका माल और उसका कर्म। फिर दो चीज़ें तो पलट आती हैं और एक साथ रह जाती है। उसके घर वाले और माल तो वापस आ जाते हैं और उसका कर्म साथ रह जाता है'' (बुख़ारी, मुस्लिम)।

क़ुरआन में है–''आख़िरकार प्रत्येक व्यक्ति को मरना है और तुम सब अपना पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन पाने वाले हो। कामयाब वास्तव में वह है, जो वहां जहन्नम की आग से बच जाए और जन्नत में पहुंचा दिया जाए। रहा यह संसार, तो यह केवल बाह्य धोखे की चीज़ है (क़ुरआन, 3:185)।

उस दिन हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और किसी के साथ अन्याय न होगा। (क़ुरआन, 3:25)

उस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने भले कर्म को सामने मौजूद पाएगा और बुरे

को भी। जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कोई अन्याय न होगा (क़ुरआन, 3:30,25)। उस दिन उसके न माल काम आएगा और न संतान (क़ुरआन, 26:88)। ख़ुद इन्सान के हाथ, पैर, आंख, जिह्वा और सारे अंग गवाही देंगे कि उनसे उसने किस प्रकार काम लिया। (क़ुरआन, 36:65, 41:20-24)

अल्लाह कहता है—

''और क़ियामत के दिन हम न्याय-तुला रखेंगे, फिर किसी व्यक्ति पर तनिक ज़ुल्म न किया जाएगा, यद्यपि वह (कर्म) राई के दाने ही के बराबर हो, हम उसे ला उपस्थित करेंगे। और हिसाब करने के लिए हम काफ़ी हैं।''

(क़ुरआन, 21:47)

वह दिन सत्कर्मी के लिए सुगम और दुष्कर्मी के लिए कठिन होगा। क़ुरआन में है—

''जो कोई सुचरित लेकर आया उसको उससे भी अच्छा प्राप्त होगा, और ऐसे लोग घबराहट से उस दिन निश्चिन्त होंगे। और जो कुचरित लेकर आया तो ऐसे लोगों के मुंह आग में औंधे होंगे।'' (क़ुरआन, 27:89,90)

कोई शब्द उसके मुख से नहीं निकलता जिसे सुरक्षित करने के लिए एक उपस्थित रहने वाला निरीक्षक (फ़रिश्ता) मौजूद न हो (50:18)। वह (अल्लाह) छिपे और खुले हर चीज़ को जानता है।...तुममें से कोई व्यक्ति चाहे ज़ोर से बात करे या धीरे से, और कोई रात के अंधेरे में छिपा हुआ हो या दिन के उजाले में चल रहा हो, उसके लिए सब समान है (क़ुरआन, 13:9,10)।

''फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, उससे आसान, सरसरी हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने लोगों की ओर ख़ुश-ख़ुश पलटेगा। और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएं हाथ में) दिया गया, जिसको (उसने) पीठ पीछे डाल रखा था, तो वह विनाश को पुकारेगा और दहकती आग में जा पड़ेगा।'' (क़ुरआन, 84:7-12)

''वास्तव में घाटे में पड़ने वाले तो वही हैं, जिन्होंने अपने आपको और अपने लोगों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान रखो, यही खुला घाटा है।'' (क़ुरआन, 39:15)

जन्नत (स्वर्ग)

जन्नत के पात्र वही व्यक्ति होंगे, जिन्होंने जीवन भर अल्लाह की बन्दगी (उपासना) करते हुए अच्छे कार्य किए होंगे। अल्लाह का यह वादा है—"वे लोग जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहां वे सदैव रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन हो सकता है?" (क़ुरआन, 4:122)

जो लोग ईमान लाए अर्थात् मुस्लिम हुए और अच्छे कर्म किए, तो उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है (क़ुरआन, 95:6)। उसे कोई नहीं जानता जो आंखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी गई है उसके बदले में देने के ध्येय से जो सुकर्म वे करते रहे होंगे (क़ुरआन, 32:17)।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का कथन है—

क़ियामत के दिन बन्दा एक क़दम भी आगे न बढ़ सकेगा, जब तक कि उससे पांच बातों का जवाब न ले लिया जाए—अपनी आयु किस प्रकार व्यतीत की, अपनी जवानी किस तरह बिताई, माल कहां से कमाया? माल कहां ख़र्च किया? और जो सद्ज्ञान उसने अर्जित किया उस पर कितना अमल किया? (तिरमिज़ी)

एक और हदीस में इस तरह है—

हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत (उल्लिखित) है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा कि जबकि जन्नत वाले जन्नत की नेमतों में होंगे, सहसा उनके लिए एक नूर रौशन होगा सो वे अपने सिर उठाएंगे तो क्या देखेंगे कि उनका रब (पालनकर्ता प्रभु) उनके ऊपर प्रगट है। अल्लाह कहेगा : 'तुम पर सलाम हो, ऐ जन्नत वालो!' आप (सल्ल॰) ने कहा कि अल्लाह तआला उनकी तरफ़ देखेगा और वे उसकी तरफ़ देखेंगे। फिर वे जब तक अल्लाह की तरफ़ देखते रहेंगे, जन्नत की किसी नेमत की ओर ध्यान नहीं देंगे, यहां तक कि अल्लाह उनसे परदे में हो जाएगा और बाक़ी रह जाएगा उसका नूर। (इब्न माजा)

पवित्र क़ुरआन में जन्नत का चित्रण है—

अल्लाह के परायण और उससे डर रखने वाले सुगन्धित फूल और नेमत भरे उद्यान में होंगे, उनके लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे (क़ुरआन, 56:89,

18:107)। उनके लिए ऊपरी मंज़िल पर कक्ष होंगे, जिनके ऊपर भी निर्मित कक्ष होंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी (39:20, 29:58)। वे जो चाहेंगे मिलेगा, उसमें वे सदैव रहेंगे (क़ुरआन, 25:16)। उन्हें वास्तविक शांति और निश्चिन्तता प्राप्त होगी। वे बाग़ों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए एक-दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे (क़ुरआन, 44:51,53)। उनके लिए सुख वैभव की चीज़ें होंगी। वे और उनकी पत्नियां छायों में मसहरियों पर तकिया लगाएं बैठे होंगे (क़ुरआन, 36:55,56)। उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जाएगा (क़ुरआन, 35:33, 76:21)। उनके लिए सोने और चांदी के बरतन होंगे (क़ुरआन, 43:71, 76:15,16)। अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए वह कुछ जुटा रखा है, जिसको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के मन में उसका विचार आया।

जन्नत में न तो सख़्त धूप होगी और न सख़्त ठंड (क़ुरआन, 76:13)। फलों से लदे हुए पेड़ होंगे, अंगूर के बाग़ होंगे, मनचाहे मेवे होंगे (क़ुरआन, 76:13,14, 78:32, 77:42)। साफ़, गोरी, बड़ी नेत्रों वाली स्त्रियों से उनका विवाह होगा (क़ुरआन, 44:54)। उनके लिए हरे रेशमी गद्दे और उत्कृष्ट एवं असाधारण क़ालीन होंगे, क़ालीनें हर ओर बिछी होंगी (क़ुरआन, 55:76:88:16)। उन्हें वहां इच्छित मेवे और पेय मिलेंगे, उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिल्कुल साफ़ उज्ज्वल, पीने वालों के लिए सुस्वादु, छलकता जाम होगा, उसमें न कोई ख़ुमार होगा और न वे उससे निढाल और मदहोश होंगे (क़ुरआन, 38:51, 37:45-47)।

जन्नत वालों के चेहरे प्रफुल्लित और सौम्य होंगे। उनसे नेमतों की ताज़गी और आभा का बोध हो रहा होगा (क़ुरआन, 88:8, 83:24)। वे कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे, और न कोई झुठलाने की बात (क़ुरआन, 78:35, 88:11)। वे भली प्रकार सदैव स्वस्थ ओर सानन्द होंगे। हदीस में है—

''यहां वह स्वास्थ्य है कि बीमार न पड़ोगे, वह जीवन है कि मृत्यु न आएगी, वह जवानी है कि वृद्ध न होंगे, और वह आराम है कि फिर तकलीफ़ न पाओगे। लोगों के चेहरे अपने-अपने कर्मों के अनुसार चमकेंगे कोई सितारे की तरह, कोई पूर्णिमा के चांद की तरह।'' (मुस्लिम)

जन्नत के संबंध में ऊपर जो विवरण वर्णित हुए हैं, वे स्वाभाविक रूप से

प्रत्येक समझदार और विवेकशील व्यक्ति के दिल और अन्तर्मन में इसके प्रति ललक पैदा करने के लिए काफ़ी हैं। हमें अपने आपको जन्नत का पात्र बनाने हेतु गंभीर प्रयास करने चाहिए। दुनिया में हमें जो अवसर उपलब्ध हुआ है, ईश्वर का आज्ञाकारी बनकर एवं सुकर्म कर उसका समुचित सदुपयोग किया जा सकता है और लोक-परलोक दोनों में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

जहन्नम (नरक)

जहन्नम को नरक और दोज़ख़ भी कहा जाता है, जो दुष्कर्मियों और पापाचारियों का ठिकाना है। इसमें वे अत्यंत कठिन दुखदायिनी यातना से दो-चार होंगे। क़ुरआन में है—

"कहो : क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बरें दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठाने वाले हैं? ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं। यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने पालनकर्ता प्रभु की आयतों (क़ुरआन का वाक्य) का और उससे मिलन का इन्कार किया। अतः उनके कर्म जान को लागू हुए, तो हम क़ियामत के दिन उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई और मेरी आयतों एवं मेरे रसूलों (ईशदूतों) का उपहास किया" (क़ुरआन, 18:103-106)।

जिन लोगों ने इहलोक में सत्य के इन्कार की नीति अपनाई, उनको आग के वस्त्र पहनाए जाएंगे, उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा, जिससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी, उनको दंड देने के लिए लोहे के गुर्ज़ (गदाएं) होंगे। जब कभी भी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिए जाएंगे और कहा जाएगा कि चखो दहकती आग की यातना का मज़ा (क़ुरआन, 22:19-22, 44:48, 32:20)।

जहन्नम की आग बुझने न पाएगी और अपराधियों को घेरे रहेगी (क़ुरआन, 17:97, 18:29)।

आग उनके चेहरों को झुलस देगी, जिससे वे कुरूप हो जाएंगे (क़ुरआन, 23:104)।

उनके लिए आग ही ओढ़ना-बिछौना होगा (क़ुरआन, 7:41)।

उन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा (क़ुरआन, 47:15, 10:4)। ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा, जो उनके मुंह भून डालेगा (क़ुरआन, 18:29)। निःसंदेह ज़क़्क़ूम का वृक्ष गुनहगार का भोजन होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेटों में खौलता होगा जैसे गर्म पानी खौलता है। (क़ुरआन, 44:43-46)

जहन्नम एक घात-स्थल है। सरकश लोग उसमें न किसी शीतलता का मज़ा चखेंगे और न किसी पेय का सिवाय खौलते पानी और बहती पीप-रक्त के (क़ुरआन, 78:21,24,25)। वहां वे चिल्लाएंगे, आर्तनाद करेंगे, बिफरेंगे, सांस खीचेंगे और फुंकार मारेंगे, वहां वे सदैव रहेंगे। जब वे किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएंगे तो वहां विनाश को पुकारेंगे। (कहा जाएगा :) ''आज एक विनाश को मत पुकारो, बल्कि बहुत से विनाशों को पुकारो!'' (क़ुरआन, 11:106,107, 25:12-14)।

''पलटो अपने रब (पालनकर्ता प्रभु) की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी। और अनुसरण करो उस सर्वोत्तम चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें पता भी न हो।''

कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : ''हाय, अफ़सोस मुझ पर। जो कोताही अल्लाह के हक़ में मैंने की। और मैं तो परिहास करने वालों में ही शामिल रहा।'' (क़ुरआन, 39:56)।

■■

मौत के बाद क्या?

❖ **डॉ॰ सैयद शाहिद अली**

"तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो, हालांकि आख़िरत अधिक उत्तम व बाक़ी रहने वाली है।"
(क़ुरआन, 87:16,17)

"वे सांसारिक जीवन के केवल वाह्य रूप को जानते हैं, किन्तु आख़िरत की ओर से वे बिलकुल असावधान हैं। क्या उन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, सत्य के साथ और एक नियत अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत से लोग तो अपने प्रभु के मिलन का इनकार करते हैं।"
(क़ुरआन, 30:7,8)

इस दुनिया में पूरा इंसाफ़ (Perfect Justice) नहीं हो सकता। एक आदमी ने दस लोगों का क़त्ल किया, उसे पकड़ा गया और एक बार फांसी पर लटका दिया गया। यह पूरा न्याय नहीं है। पूरा न्याय तब होता, जब क़ातिल को दस बार मारा जाता और दस बार जीवित किया जाता। इसके अलावा मरनेवालों को भी जीवित किया जाता और उनके सामने, उनके क़ातिल को मारा जाता, ताकि वे ख़ुश होते और मानते कि हां हमें न्याय मिला। क्या ऐसी दुनिया है, जहाँ ऐसा हो सके?

★ एक आदमी ने चोरी की, उसे सज़ा मिली, क़ैद कर दिया गया। चोर को तकलीफ़ हुई, मगर जब तक वह क़ैद में रहा, उसकी मां को भी तकलीफ़ होती रही। अपराध तो बेटे ने किया था, सज़ा मां को क्यों मिल रही है? मां को तकलीफ़ इसलिए होती रही, क्योंकि मां और बेटे के बीच एक भावनात्मक सम्बन्ध (Emotional Link) होता है। यह लिंक, अगर काट दिया जाता, तो

बचपन में बच्चे की परवरिश व देख-भाल कैसे होती। सर्दी की रात में तीन बजे, जब बच्चा सूसू करता और रोता, तो मां क्यों उठती, बच्चे को नमूनिया हो जाता और वह मर जाता। पूरे इंसाफ़ के लिए ज़रूरी है कि एक ऐसी दुनिया हो, जहां मां-बेटे दोनों जवान हों और दोनों के बीच भावनात्मक सम्बन्ध (Emotional Link) न हो, ताकि सज़ा की तकलीफ़ केवल अपराधी को हो, किसी और को न हो। क्या ऐसी दुनिया है?

एक बहुत अच्छा इंसान, जिसके अच्छे कामों से लाखों लोगों को लाभ पहुंचा। इसी तरह एक बहुत बुरा इंसान जिसने अपनी बुराई से लाखों लोगों को हानि पहुंचाई। इस छोटे से जीवन में इन दोनों को उनके अच्छे या बुरे कामों का पूरा-पूरा अच्छा या बुरा बदला नहीं दिया जा सकता। ऐसा क्यों है?

★ दुनिया में हर काम (Action) की प्रतिक्रिया (Reaction) नज़र आती है। एक आदमी ने दूसरे आदमी को मारा, वह बेहोश हो गया। भूखे आदमी ने खाना खाया, उसकी भूख ख़त्म हो गई। बीमार ने दवा खाई, वह ठीक हो गया। मगर दुनिया में कुछ काम ऐसे भी हैं, जिनकी प्रतिक्रिया नज़र नहीं आती। आपने किसी अंधे को सड़क पार करा दी। रास्ते से केले का छिलका हटा दिया। ख़ुद भूखे रहकर, भूखे को खाना खिला दिया। ऐसे कामों की प्रतिक्रिया कहां है?

★ इस जीवन में इंसान को जो भी नेमत मिलती है, वह अपने साथ ज़िम्मेदारी और जवाबदेही ज़रूर लाती है। इसके अतिरिक्त मिली हुई हर नेमत के साथ डर और दुख ज़रूर लगा होता है। जितनी बड़ी नेमत उतना ही बड़ा उसके छिन जाने का डर और उतना ही बड़ा उसके जाने का दुख। ऐसा क्यों होता है?

★ सभी रिश्तों (Relationship) में एक मिलने की जगह (Meeting-Place) भी होती है। डॉक्टर और मरीज़ का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, क्लीनिक। वकील और मुवक्किल का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, कोर्ट। टीचर और छात्र का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, क्लास रूम। माता-पिता और संतान का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, घर। ईश्वर (Creator) और इंसान (Created) का रिश्ता, मीटिंग प्लेस कहां है?

★ सम्पूर्ण ख़ुशी पाने के लिए इंसान को चाहिए कि उसकी सभी

आवश्यकताएं पूरी हों। उसकी सभी इच्छाएं पूरी हों। वर्तमान और भविष्य में उसे सुरक्षा (Security) मिले। उसके सभी रिश्तेदार मौजूद हों (मैं ख़ुश नहीं हो सकता, जब तक मेरे बाप न मौजूद हों, मेरे बाप ख़ुश नहीं हो सकते, जब तक उनके बाप जीवित न हों। मेरे बाप के बाप ख़ुश नहीं हो सकते, जब तक उनके बाप मौजूद न हों.....), सभी तन्दुरुस्त हों, सभी के पास दौलत हो, कोई बीमार न हो, कोई बूढ़ा न हो, कोई किसी दुर्घटना का शिकार न हो, कोई मरे न, इत्यादि। मगर दुनिया में ऐसा नहीं होता। इंसान को दुनिया में सम्पूर्ण ख़ुशी क्यों नहीं मिलती?

★ सोचो! अगर इस धरती से सभी इंसानों को हटा दिया जाए, तो क्या होगा? कुछ भी अन्तर नहीं पड़ेगा। सूरज निकलेगा, उसकी गर्मी से समुद्र में भाप बनेगी, भाप से बादल बनेंगे, जिनसे बारिश होगी, Water-Cycle (जलचक्र) इसी तरह चलता रहेगा।

सोचो! अगर इस धरती में इंसान तो हों, मगर सूरज या हवा व पानी में से किसी भी एक चीज़ को निकाल दिया जाए, तो क्या होगा? धरती का पूरा निज़ाम (System) ख़त्म (Collapse) हो जाएगा। इससे प्रमाणित होता है कि इंसान इस निज़ाम से ज़्यादातर फ़ायदा उठाने वाला (Beneficiary) है, न कि फ़ायदा पहुंचाने वाला (Contributor) । जबकि दूसरी सभी चीज़ें इंसान को केवल फ़ायदा पहुंचा रही हैं। मालूम होता है कि धरती का यह ढांचा (Structure) इंसान के लिए है, तो फिर इंसान किस ढांचे (Structure) के लिए है?

★ एक ज़िन्दा और मुर्दा इंसान में अन्तर होता है। ज़िन्दा इंसान के दिमाग़ में विचार (Thoughts) आ रहे होते हैं। वह बात कर सकता है। वह हरकत (Action) कर सकता है।

मनोविज्ञान (Psychology) के अनुसार, इंसानी दिमाग़ के दो हिस्से होते हैं : चेतन (Conscience) और अचेतन (Sub-Conscience) । अचेतन, इंसानी दिमाग़ का गोदाम होता है। इसमें इंसान की छोटी-बड़ी सभी सोचें जमा (Deposit) होती रहती हैं। एक इंसान की याददाश्त (Memory) खो गई, वह सब कुछ भूल गया। जब उसकी याददाश्त (स्मृति) वापस आई, उसे सब कुछ याद आ गया। या, कभी-कभी सपनों (Dreams) में बचपन की बातें नज़र आती हैं। इससे प्रमाणित होता है कि इंसान की सभी सोचें, कहीं सुरक्षित

होती रहती हैं, तभी तो वापस आती हैं। इंसान की छोटी-बड़ी सभी सोचें उसके अचेतन मस्तिष्क में दर्ज (Record) हो रही हैं। सोचों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है?

भौतिक विज्ञान (Physics) के अनुसार, इंसान जो आवाज़ निकालता है या जो कुछ बातचीत करता है, वह कभी ख़त्म नहीं होती, बल्कि एक लाख, छियासी हज़ार मील फ़ी सैकंड की रफ़्तार से हवा में घूमती रहती हैं। साइंस ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि गुज़रे हुए समय (Past) की आवाज़ों को रिकार्ड कर सके, सुन सके। मगर ये सब आवाज़ें मिली-जुली हैं, अभी इन्हें अलग नहीं किया जा सका है। साइंस कोशिश कर रही है, इन आवाज़ों को अलग-अलग करके सुनने की। मालूम होता है कि इंसान की छोटी-बड़ी सभी आवाज़ें रिकार्ड की जा रही हैं। आवाज़ की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है?

इंसान के शरीर से हरारती लहरें (Heat Waves) निकलती हैं। यह इंसान की हर-हर हरकत (खड़े, बैठे, लेटे) का फ़ोटो बनाती हैं। नवम्बर, 1960 ई॰ के Readers Digest नामक पत्रिका में लिखा था कि अमेरिका के ऊपर से एक हवाई जहाज़ गुज़रा। दो घंटे बाद उस ख़ाली जगह से, जहाज़ में बैठे मुसाफ़िरों के फोटो ले लिए गए। वह कैमरा, जो इंसान के जाने के बाद, ख़ाली जगह से, उस इंसान का फोटो ले सके, "Evaporagraph" कहलाया। साइंस में बहस इस बात पर है कि किसी इंसान के हटने के बाद, उस ख़ाली जगह, उस इंसान का फोटो चंद घंटे बाक़ी रहता है, या हमेशा-हमेशा। संभव है, यह फ़ोटो हमेशा रहता हो। अभी साइंस ने इतनी तरक़्क़ी नहीं की है कि कई साल बाद भी ख़ाली जगह से फ़ोटो ले सके, मगर ऐसा संभव है। मालूम हुआ कि इंसान की एक-एक हरकत रिकार्ड हो रही है। इंसान की हरकतों (Movements) की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है?

इंसान की सोचों, बातों और कामों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है? क्या किसी अदालत के लिए, जहां यह पेश की जाएंगी और इसके आधार पर कोई फ़ैसला होगा?

★ इंसान के इन सभी सवालों का जवाब ख़ुदा ने दिया है। ख़ुदा (ईश्वर) ने बताया कि इंसान को कभी न ख़त्म होने अर्थात हमेशा-हमेशा के लिए पैदा किया गया है। इंसान की ज़िन्दगी के दो हिस्से (Parts) हैं। एक, मरने से पहले वाली ज़िन्दगी (Life Before Death) जो बहुत थोड़े समय और

इम्तिहान के लिए है। दूसरे, मरने के बाद वाली ज़िन्दगी (Life-After-Death) जो हमेशा-हमेशा के लिए है। जिसमें मरने से पहले वाली ज़िन्दगी में किए गए कामों के आधार पर, सज़ा (जहन्नम) या इनाम (जन्नत) मिलेगा। मरने के बाद कभी न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी को ख़ुदा ने ''आख़िरत'' (परलोक) का नाम दिया है। आख़िरत को मानना इंसान के सभी सवालों का जवाब है।

★ ज़िन्दगी की कहानी मौत के साथ ख़त्म नहीं होती। बिल्कुल इसी तरह जैसे टीवी पर एक फ़िल्म चल रही हो और अचानक बीच में ही यह कह दिया जाए कि फ़िल्म ख़त्म हो गई। या कोई उपन्यास बीच में ही ख़त्म कर दिया जाए। अगर ऐसा होगा, तो फ़िल्म देखनेवाला या उपन्यास पढ़नेवाला, इस बात को नहीं मानेगा। वह जानना चाहेगा कि, अंजाम क्या हुआ? फ़िल्म के बनानेवाले, उपन्यास के लिखनेवाले से यह उम्मीद की जाती है कि वह अंजाम ज़रूर दिखाए। बिल्कुल इसी तरह क्या कोई अक़्लमंद इंसान यह मान सकता है कि हमारी ज़िन्दगी की कहानी, हमारी मौत के साथ ख़त्म हो जाएगी, जबकि अभी कहानी पूरी नहीं हुई, ख़ुदा हमें हमारे अंजाम तक नहीं पहुंचाएगा। हक़ीक़त में पारलौकिक जीवन ही हमारी कहानी का अंजाम (परिणाम) है।

मरने के बाद जीवन की परिकल्पना तक़रीबन सभी धर्मों में पाई जाती है, यहां तक कि हिन्दू मत में भी। वेद में पुनर्जीवन की बात कही गई है, जिसका अर्थ मृत्यु के पश्चात् हमेशा के एक जीवन से है। वेदों में आवागमन और पुनर्जन्म नहीं पाया जाता। पुनर्जन्म और आवागमन दो अलग-अलग चीज़ें हैं। वेदों में पुनर्जीवन है, जिसका अर्थ मनुष्य को अपने कर्मों के फल हेतु दोबारा जन्म लेना है, जबकि आवागमन का अर्थ मोक्ष प्राप्ति तक कर्मानुसार 84 लाख योनियों में बार-बार जन्म लेना है। उपनिषद काल में पुनर्जन्म और आवागमन को एकार्थी बना डाला गया। छान्दोग्य उपनिषद ने सब से पहले पुनर्जन्म (परलोक में ही नहीं, इस लोक में भी कर्मानुसार प्राणी जन्म लेता है) की बात कही गई है।

पुनर्जन्म का आरंभिक ''पुनः'' शब्द का अर्थ होता है ''दोबारा'' न कि ''बार-बार''। फिर भी ''बार-बार'' का अर्थ ग्रहण करके उपनिषदों के द्वारा इसकी स्थापना कर डाली गई और पुराणों, रामायण, महाभारत एवं धर्मशास्त्रों आदि में इसको अत्यधिक विस्तार दे दिया गया। इनमें श्राद्ध-सिद्धांत अर्थात

मृतक की आत्मा को शांति पहुंचाने का कर्मकांड भी विद्यमान है, जो पुनर्जन्म के पूर्णतः विपरीत है।

क़ुरआन के अनुसार हर इंसान को मरने के बाद दोबारा पैदा किया जाएगा। यह एक न ख़त्म होनेवाला जीवन होगा। यह सांसारिक जीवन अच्छे या बुरे कर्म करने की जगह है और मरने के बाद का शाश्वत जीवन इन कर्मों के आधार पर अच्छा या बुरा बदला पाने की जगह।

★ इस ग्रह अर्थात् पृथ्वी पर पैदा होनेवाला हर ज़िन्दा इंसान अपने साथ वापसी का टिकट लेकर पैदा होता है और जीवन भर उसे इसके कन्फर्म होने का इन्तिज़ार रहता है। वापसी के टिकट के इसी पुष्टिकरण (Confirmation) का दूसरा नाम ''मृत्यु'' है।

★ इंसान का बीमार, बूढ़े और अर्थी को देखकर यह नतीजा निकालना कि जीवन दुख है, सही नहीं है। क्योंकि यह किसी एक इंसान का ख़्याल हो सकता है, जबकि सही बात वह है, जो बीमारी, बूढ़ापा और मौत देनेवाला (ख़ुदा) ख़ुद बताता है।

ख़ुदा बताता है कि सांसारिक जीवन इंसान के लिए एक इम्तिहान है। बीमारी, इस इम्तिहान का एक परचा है, बुढ़ापा इम्तिहान के ख़त्म होने की चेतावनी है और मौत इम्तिहान के ख़त्म होने का एलान है।

★ डेढ़ लाख इंसान, प्रतिदिन इस दुनिया से मर कर चले जाते हैं। ये सब लोग कहाँ जाते हैं? यह एक अहम सवाल है। इससे आँखें बन्द नहीं की जा सकतीं। दुनिया का कोई विज्ञान इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता, केवल धर्म ही इस सवाल का जवाब दे सकता है। धर्म में से भी केवल वही एक धर्म इसका सही जवाब दे सकता है, जिसने ज़िन्दगी और मौत देने वाले की वाणी को विशुद्ध व पूर्णतः सुरक्षित कर रखा है।

★ क्या हर इंसान के मरने का समय अर्थात् उसके इम्तिहान ख़त्म होने का टाइम तय है? क़ुरआन कहता है ''हाँ'' हर इंसान के मरने का समय पहले ही से तय है।

> **''अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई व्यक्ति मर नहीं सकता। हर व्यक्ति एक लिखित निश्चित समय का अनुपालन कर रहा है।''** (क़ुरआन, 3:145)

मौत को बार-बार याद करने को इस्लाम पसन्द करता है। क्योंकि इस बात का इंसान पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। अच्छा काम करने के रास्ते में जो सुस्ती आती है वह दूर होती है। इंसान अच्छा काम करने में जल्दी करता है। गुनाहों (पापों) को छोड़ने व तौबा (पश्चाताप) करने में भी जल्दी करता है और इंसान अत्याचार करने से भी रुक जाता है।

मौत को अपनी मर्ज़ी से बुलाने अर्थात् आत्महत्या (Suicide) करने को इस्लाम अवैध (Prohibited) बताता है। क्योंकि यह ख़ुदा से मायूस (निराश) होने और इंसान के बारे में उसकी स्कीम से विद्रोह करने जैसा है। ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

> **''तुममें से कोई (किसी भी वजह से) मौत की तमन्ना न करे और न जल्द मौत आने की दुआ करे। क्योंकि जब मौत आ जाएगी, तो उसके कर्म का सिलसिला रुक जाएगा और ख़ुदा को (उसके बताए गए तरीक़े के अनुसार) माननेवाले के लिए उसकी आयु भलाई को बढ़ाने का कारण बनती है।''**
>
> (हदीस : मुस्लिम)

> **''मौत की दुआ न करो और न उसकी तमन्ना करो। अगर किसी व्यक्ति के लिए ऐसी दुआ करनी ज़रूरी हो, तो वह इस तरह कहे, ''ऐ अल्लाह! मुझे ज़िन्दा रख जब तक कि मेरे लिए ज़िन्दगी बेहतर हो और मुझे (दुनिया से) उठा ले, जब मौत मेरे लिए बेहतर हो।''** (हदीस : नसई)

उपर्युक्त बातों का सारांश यह है कि ईश्वर के एक होने के सिद्धांत को हम इस तरह स्वीकार करें कि उसकी हस्ती (अस्तित्व) गुण, अधिकार, सत्ता व स्वामित्व में किसी को शरीक न करें। अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने ईश्वर की इबादत का पूरा तरीक़ा हमें बताया व करके दिखाया है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर अन्तिम ग्रंथ पवित्र क़ुरआन अवतरित हुआ, जो पूर्णतया विशुद्ध रूप से सुरक्षित है। यह किताब समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शन है। इस सांसारिक व पारलौकिक जीवन में सफलता व मुक्ति के लिए इन सच्चाइयों को स्वीकार करते हुए ईश्वर के बताए हुए मार्ग पर चलना ज़रूरी है।

■■

परलोक की तैयारी आज से...

❖ **मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मन्सूरी**

इस भौतिक व सांसारिक जीवन का अन्त हो जाना एक सर्वमान्य सत्य है। हां, इस बात में मतभेद हो सकता है, और मतभेद है भी कि इसके अन्त के बाद क्या होगा? आस्तिकता और धर्म का पक्ष यह है कि इसके बाद एक और जीवन है। नास्तिक व धर्म अविश्वासी लोग कहते हैं कि इसके बाद कोई दूसरा जीवन नहीं है। उनका कहना है कि हम मर कर हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएंगे। ऐसा नहीं हो सकता कि जब सड़-गलकर या जलकर हमारा शरीर बिल्कुल ही नष्ट हो जाए, तो फिर हम शरीर धारण करके नया जीवन प्राप्त कर लें।

प्रभाव में अन्तर

उपरोक्त दोनों दृष्टिकोणों में से किसी एक को धारण करने के लिए हर व्यक्ति आज़ाद है, अर्थात् उस पर कोई एक विचारधारा थोपी नहीं जा सकती। लेकिन चूंकि सृष्टि में मनुष्य ही ऐसा जीव है जिसे उसके स्रष्टा ने बुद्धि-विवेक प्रदान किया है, इसलिए बुद्धिमानी यह है कि दोनों विपरीत दृष्टिकोणों के, इस जीवन (आचार-विचार, व्यवहार व चरित्र आदि) पर पड़ने वाले प्रभावों पर अवश्य विचार किया जाए। यही बात मनुष्य को पशु से और मानव को दानव से अलग करती है और उसे श्रेष्ठ और सम्मान्य आदरणीय भी।

पहले दृष्टिकोण का प्रभाव

धार्मिक पक्ष का मूलाधार ''ईश्वर में पूर्ण विश्वास'' है। यहां ईश्वर को स्रष्टा, स्वामी, प्रभु, प्रति पालक, पोषक, निरीक्षक, संरक्षक, न्यायाधिपति, पूज्य व उपास्य माना गया है। इस दृष्टिकोण को अनिवार्य रूप से अपेक्षित है कि इन्सान ईश्वर का आज्ञाकारी, कृतज्ञ, ईशपरायण, दास और बन्दा हो। उसका

जीवन-कर्म अच्छा, सुन्दर और उत्तम हो, जो स्पष्ट है अवज्ञाकारी, उद्दण्ड, पापी, उपद्रवी, सरकश, ज़ालिम, व्यभिचारी, अत्याचारी जनों से बिल्कुल भिन्न होगा।

दूसरे दृष्टिकोण का प्रभाव

नास्तिक, अधर्मी या धर्मरहित दृष्टिकोण का प्रभाव यह है कि इन्सान और पशु के जीवन-उद्देश्य व जीवन-शैली में थोड़ा अन्तर रह जाता है। पशु के लिए 'खाओ, पियो और मर जाओ।' और मनुष्य के लिए 'खाओ-पियो, मौजमस्ती-ऐश करो और मर जाओ।' यह 'थोड़ा-सा' अन्तर इन्सान व समाज को मानवता और मानवीय मूल्यों से बहुत ज़्यादा नीचे गिरा देता है और मानवीय गौरव, गरिमा एवं उत्कृष्टता को आघात पहुँचा कर उसका आंशिक या पूर्ण विनाश कर देता है। यही वजह है कि संसार में लूट-मार, दमन, शोषण, अनाचार, नरसंहार, फ़साद, व्यभिचार, अन्याय, भ्रष्टाचार फैला हुआ है। व्यापक अपराधीकरण ने विकट वातावरण बना रखा है। इन समस्याओं के तीन प्रमुख कारक हैं—पहला : ईश्वरीय धर्म का इन्कार, दूसरा : धर्म को मानते हुए भी धर्म से उदासीनता व विमुखता और तीसरा : लगभग दुनिया की तीन चौथाई (75 प्रतिशत) आबादी की धार्मिक मान्यताओं व धारणाओं में इस क्षमता व शक्ति का न होना कि वे अपने मानने वालों को ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी होने का प्रबल व यथार्थ विश्वास दिला सकें; ऐसा दृढ़, अडिग विश्वास कि ईश्वर के सामने उत्तरदायित्व की भावना मनुष्य (तथा उससे बने समाज व सामूहिक व्यवस्था) को नेक, ईमानदार, चरित्रवान, शालीन, उपकारी बना सके तथा बदी-बुराई दुष्कर्म, अत्याचार, अन्याय, उपद्रव आदि से बचा सके।

इस्लाम का पक्ष

इस्लाम उन धर्मों में से है जो इस जीवन के बाद एक और जीवन की अवधारणा रखता है। यह अवधारणा उसकी तीन मूल-धारणाओं—विशुद्ध एकेश्वरवाद, परलोकवाद, ईशदूतवाद—में से एक है। इसकी सरल-सहज व्याख्या यह है :

मनुष्य को संसार में एक नियतकालीन जीवन दिया गया है, लेकिन वास्तव में मानव-जीवन दीर्घकालीन है। इस जीवन के दो चरण हैं जो प्रत्यक्ष रूप में

तो अलग-अलग हैं, लेकिन परोक्षतः एक-दूसरे के पूरक-संपूरक तथा परस्पर संलग्न हैं। यहां का (इहलौकिक) जीवन समाप्त होते ही, आत्मा आगे के (पारलौकिक) जीवन में पहुँच जाती है। क़ियामत (महाप्रलय) के बाद इस जीवन का नष्ट हो चुका शरीर, ईश्वर की महान सृजन-शक्ति-क्षमता द्वारा पुनः सृजित कर दिया जाएगा और वही आत्मा उसमें फिर से आ जाएगी। फिर मानव-जाति के आदि से अन्त तक के सारे इन्सान ईश्वर के सामने हाज़िर किए जाएंगे। प्रत्येक के जीवन भर की 'कर्मपत्री' खोली जाएगी। पूर्ण इन्साफ़ से हिसाब होगा। किसी के साथ भी वंश, रंग, भाषा, वर्ण, वर्ग, क़ौम, जाति, स्टेटस और राष्ट्रीयता आदि के आधार पर तनिक भी पक्षपात न होगा। ये सारे सांसारिक मानदण्ड और अमीर-ग़रीब, शासक-शासित, राजा-प्रजा, मालिक-नौकर, सबल-निर्बल, सत्ताधारी-सत्ताविहीन, ऊंच-नीच आदि के सारे मानदण्ड, महान, प्रभुत्वशाली, न्यायप्रद, निष्पक्ष, सर्वशक्तिवान, तत्वदर्शी ईश्वर के न्यायालय में समाप्त कर दिए जाएंगे। हरेक के साथ दोषरहित, त्रुटिरहित, और पूर्ण न्याय होगा। हरेक को उसके जीवन भर का लेखा-जोखा, कर्म-पत्र और परिणाम-पत्र थमा दिया जाएगा। कुछ लोगों के स्वर्ग में जाने का और कुछ के नरक में जाने का फ़ैसला सुना दिया जाएगा। स्वर्ग—जिसमें वैभव, सुख, शान्ति, आराम और ऐसी-ऐसी नेमतों के बीच एक शाश्वत और अमर जीवन होगा, जिनकी कल्पना भी इस अस्थाई, त्रुटिपूर्ण, नश्वर, सीमित जीवन में नहीं की जा सकती। नरक—जिसमें दुख, प्रताड़ना, आग व ईश्वरीय प्रकोप के बीच एक अति दीर्घ जीवन होगा, जिसकी भयावह, कष्टकर और सज़ाओं की कल्पना भी इस जीवन में करनी असंभव है।

मानव-प्रकृति की मांग

मानव प्रकृति—यदि मूल (Nature) पर क़ायम हो एवं विभिन्न अन्दरूनी और बाहरी कारकों ने उसमें विकार, बिगाड़ व अमौलिकता न पैदा कर दी हो, तो, अपने सहज स्वभाव के अन्तर्गत यह माँग करती है कि :

★ अच्छे और बुरे लोगों का मरने के बाद एक जैसा ही परिणाम न हो, अर्थात् सड़-गलकर एक ही तरह दोनों ख़त्म हो जाएं और कहानी समाप्त हो जाए, ऐसा न हो।

★ ईश्वर के बाग़ियों, अवज्ञाकारियों, इन्कार करने वालों का तथा ईशोपासक, ईशपरायण, ईश-आज्ञापालक लोगों का परिणाम, मृत्यु के पश्चात्, उनके इस जीवन के कर्मों के अनुसार ही अलग-अलग हो।

★ जिन लोगों ने अत्याचार व अन्याय किए और धन, सत्ता, पहुंच-सिफ़ारिश, धौंस-धांधली या क़ानून व सज़ा के सांसारिक विधानों व प्रावधानों की त्रुटि, सीमितता या पक्षपात के चलते या किसी अन्य कारण से तो साफ़ (Clean Chit) बच गए या थोड़ी-सी, अधूरी, प्रतीकात्मक (Symbolic) सज़ा पाकर बच निकले उनको न्याय के साथ वह पूरी सज़ा मिले जो इस जीवन में न मिल सकी थी।

★ जिन लोगों के साथ इस जीवन में अत्याचार हुआ, जिनके अधिकारों का हनन हुआ, जिनका बहुआयामी शोषण किया गया और जिन्हें पूरा या आधा-अधूरा या कुछ भी इन्साफ़ न मिला उन्हें और न कभी, कहीं पूरा न्याय मिलना चाहिए, क्योंकि ईश्वर के बारे में यह कल्पना तक नहीं की जा सकती कि उसने इन्सानों और इन्सानी समाज के लिए अपनी व्यवस्था को अराजकता (Anarchy) के हवाले कर दिया हो।

★ जो लोग नेक और चरित्रवान हुए, बड़े से बड़ा नुक़सान उठाकर, घोर कष्ट झेल कर, बड़े-बड़े ख़तरों का मुक़ाबला करके भी सत्य मार्ग को न छोड़ा। अनाचार, शोषण, उपद्रव, अराजकता, धांधली, ज़ुल्म के तेज़ तूफ़ान में भी उनके क़दम सत्यमार्ग पर जमे रहे और इस जीवन में उन्हें इस सदाचार व सत्यनिष्ठा का अच्छा और भरपूर बदला, पुरस्कार, पारितोषिक न मिला उसे मिलने के लिए कोई और जगह, कोई अवसर, कोई और जीवन अवश्य प्राप्त होना चाहिए।

इस्लाम की परलोक के सम्बन्ध में धारणा

इस्लाम की परलोक के सम्बन्ध में धारणा मानव-जीवन की अपेक्षाओं को भली-भांति पूरा करती है। यह मानवीय प्रकृति के ठीक अनुकूल और बुद्धिसंगत है। यह मानव-प्रकृति की उपरोक्त सारी माँगों को सक्षम, सक्रिय, बुद्धिगत, स्वाभाविक रूप से और सम्पूर्णता के साथ संतृप्त (satiate) और पूरा करती है।

अन्य धारणाओं से तुलना

मृत्यु-पश्चात् जीवन के बारे में अनेक धार्मिक अवधारणाएं संसार में पाई जाती हैं। उन पर एक तुलनात्मक और सरसरी निगाह डालते चलने से इस्लामी अवधारणा की विशिष्टता व श्रेष्ठता आसानी से नज़र आ जाती है–

1. एक अवधारणा यह है कि अमुक विभूति या व्यक्तित्व पर ईमान ले आना ही मोक्ष, मुक्ति या परलोक में स्वर्ग पाने के लिए काफ़ी है। इस विश्वास के बाद नेकी-बदी, पुण्य-पाप, सदाचरण-दुराचरण आदि बातें निरर्थक हो जाती हैं। इस मान्यता से कैसा मनुष्य, कैसा समाज बनेगा? कैसा चरित्र, कैसा नैतिक वातावरण बनेगा, इस बारे में कुछ कहना ही व्यर्थ है। विशेषकर पिछली आधी सदी से पूरी दुनिया इस मान्यता से उपजी मानसिकता, सभ्यता-संस्कृति और पूरे विश्व में मची उधमबाज़ी को देख रही तथा इसके दुष्परिणामों, कुप्रभावों को झेल रही है।
2. एक मान्यता यह है कि यही जीवन अच्छों के लिए स्वर्ग है और बुरों के लिए नरक। अतः पारलौकिक जीवन की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसा मानने वाले लोग, ज़िन्दगी के दूसरे मामलों में तो बड़ी सूझ-बूझ, छान-फटक, अध्ययन-विश्लेषण, ज्ञानोपार्जन, अक़्लमन्दी व गंभीरता से काम लेते हैं, लेकिन एक गंभीरतम मामले में जो चीज़ सबसे पहले और पूरी तरह त्याग देते हैं वह चीज़ है 'गंभीरता'। यह बात कि हर दुष्कर्मी को इसी जीवन में पूरी सज़ा मिल जाती है और हर सुकर्मी को पूरा इनाम। यह बात भी और अवास्तविक अतार्किक भी है। यह बात रोज़ाना के अनुभवों के बिल्कुल ख़िलाफ़ और प्रतिकूल सिद्ध होती है।
3. तीसरी मान्यता यह है कि इस जीवन के बाद कर्मानुसार आत्मा किसी अन्य अच्छे या बुरे जीव के शरीर में जा बसेगी। उन जीवों के जीवन-मरण के साथ-साथ, 'शरीर-परिवर्तन' का क्रम चलता रहेगा। इस मान्यता में एक तार्किक त्रुटि यह है कि यह इस जीवन में मनुष्य के चरित्र निर्माण में कोई यथार्थ, प्रभावकारी, सक्रिय भूमिका निभाने और उसे ईश्वर के समक्ष पारलौकिक जीवन में उत्तरदायी बनाने में व्यावहारिक स्तर पर पूरी तरह अक्षम, असमर्थ और असफल है।

उपरोक्त पंक्तियों में, 'मृत्यु-पश्चात जीवन' की जो स्पष्ट इस्लामी धारणा

बयान की गई है उसमें ऊपर लिखी गई तीनों सीमितताओं (Limitations) और या त्रुटियों का समाधान निहित है। इस्लाम का दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट, निश्चित (हर भ्रम, उलझाव और जटिलता से रहित) है। इस्लामी धारणा है कि (1) हर व्यक्ति का हर काम चाहे एकांत में किया गया हो, चाहे लोगों को सामने चाहे अन्धेरे में किया गया हो, चाहे उजाले में, अल्लाह के अदृश्य फ़रिश्तों के माध्यम से हर क्षण रिकार्ड किया जा रहा है। (2) आदमी को सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी अपार-असीम शक्ति व सामर्थ्य से जिस तरह पहली बार बनाया था (जबकि उससे पहले उसका अस्तित्व ही नहीं था), उसी प्रकार एक बार फिर उसे बना देना (जबकि उसका अवशेष और डी॰एन॰ए॰ इसी भूमण्डल, वायुमण्डल एवं ब्रह्माण्ड में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में मौजूद है) ईश्वर के लिए असंभव तो बहुत दूर की बात, तनिक भी कठिन न होगा। (3) हर मनुष्य के जीवन भर के किए-धरे कर्मों का पूरा-पूरा बदला उसे परलोक में पूरे न्याय के साथ दे दिया जाएगा। (4) और यह बदला या तो स्वर्ग होगा या फिर नरक।

क़ुरआन में पारलौकिक जीवन

इस्लाम का मूल स्रोत 'क़ुरआन' नामक वह ईशग्रंथ है, जिसकी ऐतिहासिकता व प्रामाणिकता के विश्वसनीय होने पर संसार के (मुस्लिम व ग़ैर-मुस्लिम) सभी निष्पक्ष व पूर्वाग्रहरहित (Unprejudiced) विद्वानों, बुद्धिजीवियों एवं शोधकर्ताओं ने पूर्ण विश्वास ज़ाहिर किया है। यह आरम्भ से अंत तक, शब्द व शब्द ईश्वरीय वाणी है, जो किसी भी मानव- हस्तक्षेप से मुक्त, पवित्र ईशग्रंथ है। इसमें पूरे मानव जीवन का विधान और मार्गदर्शन है। इसमें इन्सान की हैसियत, उसे पैदा करने का उद्देश्य, ईश्वर की सही पहचान, मनुष्य व ईश्वर के बीच सम्बन्ध, ईश्वर के प्रति मनुष्य के कर्तव्य, दूसरे इन्सानों के प्रति कर्तव्य-अधिकार, उपासना की वास्तविकता व पद्धति, मृत्यु-पश्चात जीवन की व्याख्या विस्तार से वर्णित हुई है। पारलौकिक जीवन से सम्बन्धित क़ुरआन की बहुत-सी आयतों में से कुछ के भावानुवाद यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

★ ''उस दिन हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और किसी के साथ अन्याय न होगा।'' (क़ुरआन, 3:25)

★ ''...और (उस समय, परलोक में) कर्म-पत्र सामने रख दिया जाएगा। उस

वक़्त तुम देख लोगे कि अपराधी लोग अपने जीवन-ब्यौरा से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे ''हाय हमारी तबाही! यह कैसा रिकार्ड है कि हमारी कोई छोटी-बड़ी गतिविधि ऐसी नहीं रही जो इस में उल्लिखित न हो। जो-जो कुछ उन्होंने किया था वह सब अपने सामने मौजूद पाएँगे और उस वक़्त तेरा रब किसी के साथ तनिक भी अन्याय न करेगा।'' (8:49)

★ ''उस दिन के अपमान और मुसीबत से बचो जबकि तुम ईश्वर की ओर वापस होगे। वहाँ हर व्यक्ति की अपनी कमाई हुई नेकी या बुराई का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा।'' (2:281)

★ ''कोई शब्द उस (मनुष्य) के मुँह से नहीं निकलता जिसे रिकार्ड करने के लिए एक निरीक्षक (फ़रिश्ता, उसके साथ) मौजूद न हो।'' (50:18)

★ ''तुममें से कोई व्यक्ति चाहे ज़ोर से बात करे, चाहे धीरे से कोई अन्धेरे में (कोई काम कर रहा) हो या दिन के उजाले में चल रहा हो, उसके (रिकार्ड किए जाने के) बारे में ईश्वर के लिए सब बराबर है।'' (13:10)

★ ''अन्ततः हर व्यक्ति को मरना है और तुम सब अपना पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन (परलोक में) पाने वाले हो। सफल वास्तव में वह है जो वहाँ नरक की आग से बच जाए और स्वर्ग में दाख़िल कर दिया जाए। रहा यह संसार, तो यह केवल धोखे की चीज़ है।'' (3:185)

★ ''क्या इन्सान यह समझ रहा है कि हम उसकी (गल-सड़ गई) हड्डियों को (फिर से) इकट्ठा न कर सकेंगे? क्यों नहीं? हम तो उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक (भी, दोबारा) ठीक-ठीक बना देने में सक्षम हैं। मगर (इस बात की अवहेलना करके) इन्सान यह चाहता है कि आगे भी दुष्कर्म करता रहे।'' (75:3,4,5)

हदीस में पारलौकिक जीवन

'हदीस' इस्लामी परिभाषा में इस्लाम के पैग़म्बर (सन्देष्टा, ईशदूत) हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पवित्र जीवन-आचरण और कथन को कहते हैं। इसका पूरा रिकार्ड पैग़म्बर (सल्ल॰) के समकालीन विश्वसनीय पुरुषों, स्त्रियों के वक्तव्यों के रूप में आरम्भ-काल में ही तैयार कर लिया गया था। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के सारे कथन, कार्य, गतिविधियां, पैग़म्बरीय आदेश-निर्देश

तथा क़ुरआन की आयतों की पैग़म्बर द्वारा की गई व्याख्याएं हज़ारों की संख्या में प्राचीनकाल में ही लिपिबद्ध, संकलित व संपादित कर ली गई थीं, जो आज कई भाषाओं में अनूदित हैं और हर जगह उपलब्ध हैं।

आप (सल्ल॰) के परलोक, स्वर्ग, नरक से संबंधित अनेकानेक कथनों में से कुछ को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है :

1. "क़ियामत के दिन (अर्थात् ईश्वरीय न्याय के दिन) बन्दा (जो ईश्वर के समक्ष खड़ा होगा) एक क़दम भी आगे न बढ़ा सकेगा, जब तक उससे पाँच बातों के बारे में जवाब न ले लिया जाए।

- ★ अपनी आयु किस तरह व्यतीत की (सदाचार व ईशाज्ञापालन में, या इसके विपरीत)?
- ★ अपनी जवानी किस तरह (ईशपरायणता व ईशाज्ञापालन के साथ, या इसके विपरीत) बिताई?
- ★ माल कहां से (वैध साधनों से या अवैध) कमाया?
- ★ माल कहां (सत्कर्म में या दुष्कर्म में) ख़र्च किया?
- ★ जो (सत्य का) ज्ञान उसने अर्जित किया उस पर कितना अमल किया?"

(हदीस संकलन 'तिरमिज़ी')

2. "दरिद्र (मुफ़लिस) उसे माना जाता है जो बिल्कुल ही निर्धन हो। लेकिन मेरी उम्मत (मुसलमानों) में अस्ल दरिद्र वह है जो नमाज़, रोज़ा, इबादत-उपासना आदि का एक बड़ा भंडार लेकर परलोक में ख़ुदा की अदालत में इस तरह आएगा कि उसने किसी का हक़ मारा होगा, किसी को सताया, गाली दिया होगा, किसी पर ज़ुल्म किया होगा। न्याय का तक़ाज़ा पूरा करने के लिए अल्लाह उसकी नेकियां प्रभावित व मज़लूम लोगों को देता जाएगा, यहां तक कि उसकी सारी नेकियां ख़त्म हो जाएंगी, वह पूरी तरह से दरिद्र हो जाएगा। फिर भी उसके हिसाब में उसके उपरोक्त कुकर्मों की मात्रा बाक़ी रह जाएगी, तो प्रभावित लोगों के पाप उसके खाते में डाले जाएंगे और फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि उसे घसीटते हुए ले जाएं और नरक में डाल दें।"

3. "जिसने बेटियों पर बेटों को प्रमुखता न दी बेटियों की हत्या न किया बल्कि उन्हें स्नेहपूर्वक पाला-पोसा, अच्छी शिक्षा-दीक्षा दी, अच्छे संस्कारों से

सुसज्जित किया और अच्छा रिश्ता करके उनका घर बसा दिया, वह परलोक में मेरे साथ स्वर्ग में इस तरह रहेगा'' फिर आपने हाथ की दो उंगलियां बिल्कुल क़रीब करके दिखाया।

4. उस व्यक्ति पर अल्लाह की लानत (धिक्कार) है जिसके पास उसके बूढ़े माता-पिता हों या उनमें से कोई एक हो और वह व्यक्ति उनकी/उसकी सेवा-सुश्रूषा करके स्वयं का स्वर्ग का भागी न बना सके।''

परलोक-संबंधी शिक्षाओं के व्यावहारिक परिणाम

मृत्यु-पश्चात्, पारलौकिक जीवन की अवधारणा, इस्लाम में मात्र कोई धुंधली-सी या मात्र दार्शनिक स्तर की परिकल्पना नहीं है। इसे इस्लाम ने 'दृढ़ विश्वास' का रूप दिया है। अतः इस विश्वास ने व्यक्ति व समाज की ऐसी काया पलट दी, जिसके विवरण से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। इसके असंख्य व्यावहारिक प्रभावों व परिणामों में से सिर्फ़ कुछ यहां बहुत संक्षेप में लिखे जा रहे हैं—

★ वह (अरबी) क़ौम जो शराब पानी की तरह पीती थी, (इस्लाम से पहले के अरब-साहित्य में शराब की दो सौ क़िस्मों का उल्लेख मिलता है) उस क़ौम के लोगों ने जब इस्लाम क़बूल कर लिया और ईशसन्देष्टा (पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल॰) ने सार्वजनिक घोषणा करायी कि क़ुरआन की आयतें अवतरित हुई हैं कि शराब हराम कर दी गई है (अर्थात् अब जो व्यक्ति शराब पिएगा, उसकी एक बूंद भी ज़बान पर डालेगा, एक घूंट भी पिएगा उसे परलोक में नरक की यातना झेलनी पड़ेगी) तो घोषणा सुननी थी कि लोगों ने ख़ुद अपने शराब से भरे मटके तोड़ डाले। हाथ का प्याला जो मुंह तक आ चुका था, फेंक दिया, हलक़ में उंगलियां डालकर पेट में चली गई शराब की क़ै (उल्टी) कर दी और सभा (शराब पीने की मजलिस) में घोषणा सुनकर भी किसी ने शराब का प्याला पी लिया, तो दूसरे उपस्थित लोगों ने मुक्कों, घूंसों से पीट डाला।

★ लड़की का जन्म होने पर चेहरों पर कलौंस छा जाती थी (क़ुरआन, 16:58)। विभिन्न कारणों से, बेटी को ज़िन्दा दफ़न कर देने की पिशाचीय क्रूर कुप्रथा भी प्रचलित थी। कन्याओं की हत्या के विरुद्ध क़ुरआन में आयतें (81:8,9) अवतरित हुईं, पैग़म्बर ने बस कुछ संक्षिप्त आदेश दिए।

फिर, बेटी की पैदाइश पर लोगों के चेहरे खिल उठने लगे। उसे स्वर्ग-प्राप्ति का साधन मानकर माता-पिता प्रफुल्लित और प्रसन्नचित हो जाने लगे। कन्या-हत्या का मुस्लिम समाज से पूर्ण व स्थायी उन्मूलन हो गया।

★ माता-पिता, विशेषतः जब वे बूढ़े, कमज़ोर, आश्रित हो जाएं के मान-सम्मान, आदर, सेवा-सुश्रूषा और आज्ञापालन में औलादें तत्पर हो गईं, क्योंकि इसमें उन्होंने अपनी स्वर्ग-प्राप्ति का सामान देखा।

मृत्यु-पश्चात् जीवन (परलोक, ईश्वरीय न्याय, कर्मों का पूरा बदला, स्वर्ग पाने की ललक, नरक से बचने की चिन्ता) की इस्लामी अवधारणा ने सांसारिक जीवन के किसी भी पहलू को अछूता, किसी भी क्षेत्र को अप्रभावित न छोड़ा। इतिहास, दुनिया की सबसे उजड्ड, बेढब, अनपढ़, असभ्य, शराबी, दुराचारी, दुष्चरित्र, बद्दू क़ौम (के इस्लाम-प्रवेश के बाद उस) के सदाचरण, ईमानदारी, सभ्यता, दयालुता, क्षमाशीलता, जन-सेवा, परमार्थ, त्याग, उत्सर्ग, ज्ञान-विज्ञान तथा मानवीय-मूल्यों की श्रेष्ठता व उत्कृष्टता को रिकार्ड में ले आने पर विवश हो गया। यह बदलाव, यह सम्पूर्ण क्रान्ति (Total Revolution) लाने में इस्लाम की मूलधारणा 'विशुद्ध एकेश्वरवाद' (Pure and Perfect Monotheism) के साथ लगी हुई 'परलोकवाद-अवधारणा' की ही अस्ल भूमिका व अस्ल योगदान है।

क्या हम अच्छा मनुष्य बनना नहीं चाहते? क्या हम अच्छा परिवार, अच्छा समाज, अच्छी सामूहिक व्यवस्था बनाने की आरज़ू, अभिलाषा नहीं रखते? क्या हम दुराचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अन्याय, अशान्ति, अपराधीकरण, कन्या-वध व कन्याभ्रूण-हत्या का निवारण व उन्मूलन नहीं चाहते? यक़ीनन हममें से हर कोई यह सब कुछ चाहता है। तो आइए, मृत्यु-पश्चात् जीवन की इस्लामी अवधारणा अपनाएं और बिना समय गंवाए, ''परलोक की तैयारी आज से'' ही शुरू कर दें। ईश्वर हमारी सहायता और हमारा सन्मार्गदर्शन करे।

■■

अल्लाह फ़रमाता है–(ऐ ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल०) स्पष्ट कह दो कि यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से, अब जिसका जी चाहे मान ले और जिसका जी चाहे इन्कार कर दे। हमने (इन्कार करने वाले) ज़ालिमों के लिए एक आग तैयार कर रखी है जिसकी लपटें उन्हें घेरे में ले चुकी हैं। वहां अगर वे पानी मांगेंगे तो ऐसे पानी से उनका सत्कार किया जाएगा जो तेल की तलछट जैसा होगा और उनका मुंह भून डालेगा, बहुत ही बुरा पेय और बहुत बुरा विश्राम स्थल! रहे वे लोग जो मान लें और अच्छे काम करें, तो यक़ीनन हम सत्कर्मी लोगों का बदला अकारथ नहीं किया करते। उनके लिए सदाबहार जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहां वे सोने के कंगनों से आभूषित किए जाएंगे, बारीक और गाढ़े रेशमी हरित कपड़े पहनेंगे, और ऊंची मसनदों पर तकिए लगाकर बैठेंगे। बहुत ही अच्छा बदला और उच्च श्रेणी का ठहरने का स्थान।

(सूरह, 18:29-31)

नोट–पारलौकिक जीवन की धारणा को समझने के लिए क़ुरआन का अध्ययन करना नितांत आवश्यक है।